श्रीजैनसिद्धान्तप्रवेशिका।

जिसको

आगरानिवासी स्याद्वादवारिधि विद्व-
च्छिरोमणि स्व० प० श्रीगोपाल-
दासजी बरैयाने बनाया।

प्रकाशक—

जैन ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई।

पौष, विक्रम स० १९८५।

पंचमावृत्ति] [मूल्य छह आने।

प्रकाशक—
छगनमल बाकलीवाल,
मालिक
जैन-ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, पो० गिरगांव-बम्बई।

प्रिंटर—
वि ना पराजपे
नेटिव ओपिनियन प्रेस,
आंगेवाडी, गिरगांव-बम्बई।

श्रीपरमात्मने नमः ।

श्रीजैनसिद्धान्तप्रवेशिका ।

नत्वा जिनेन्द्रं गतसर्वदोषं
सर्वज्ञदेवं हितदर्शकं च ।
श्रीजैनसिद्धान्तप्रवेशिकेयं
विरच्यते स्वल्पधिया हिताय ॥

प्रथमोऽध्याय. ।

१ प्रश्न—पदार्थोंको जाननेके कितने उपाय हैं?

१ उत्तर—चार उपाय हैं—लक्षण, प्रमाण, नय और निक्षेप ।

२ लक्षण किसको कहते हैं?

२ बहुतसे मिले हुए पदार्थोंमेंसे किसी एक पदार्थके जुदे करनेवाले हेतुको लक्षण कहते हैं । जैसे जीवका लक्षण चेतना ।

३ लक्षणके कितने भेद हैं ?

३ दो भेद हैं—एक आत्मभूत दूसरा अनात्मभूत।

४ आत्मभूतलक्षण किसको कहते हैं ?

४ जो वस्तुके स्वरूपमें मिला हो। जैसे—अग्निका लक्षण उष्णपना।

५ अनात्मभूतलक्षण किसको कहते हैं ?

५ जो वस्तुके स्वरूपमें मिला न हो। जैसे—दंडी पुरुषका लक्षण दंड।

६ लक्षणाभास किसको कहते हैं ?

६ जो लक्षण सदोष हो।

७ लक्षणके दोष कितने हैं ?

७ तीन हैं—अव्याप्ति, अतिव्याप्ति और असंभव।

८ लक्ष्य किसको कहते हैं ?

८ जिसका लक्षण किया जाय, उसको लक्ष्य कहते हैं।

९ अव्याप्तिदोष किसको कहते हैं ?

९ लक्ष्यके एकदेशमें लक्षणके रहनेको अव्याप्ति-दोष कहते हैं। जैसे पशुका लक्षण सींग।

१० अतिव्याप्तिदोष किसको कहते हैं?

१० लक्ष्य और अलक्ष्यमें लक्षणके रहनेको अति-व्याप्तिदोष कहते हैं। जैसे--गौका लक्षण सींग।

११ अलक्ष्य किसको कहते हैं?

११ लक्ष्यके सिवाय दूसरे पदार्थोंको अलक्ष्य कहते हैं।

१२ असंभवदोष किसको कहते हैं?

१२ लक्ष्यमें लक्षणकी असंभवताको असंभवदोष कहते हैं।

१३ प्रमाण किसको कहते हैं?

१३ सच्चे ज्ञानको प्रमाण कहते हैं।

१४ प्रमाणके कितने भेद हैं?

१४ दो भेद हैं, एक प्रत्यक्ष और दूसरा परोक्ष।

१५ प्रत्यक्ष किसको कहते हैं?

१५ जो पदार्थको स्पष्ट जाने ।

१६ प्रत्यक्षके कितने भेद हैं ?

१६ दो भेद हैं—एक साव्यवहारिकप्रत्यक्ष दूसरा पारमार्थिकप्रत्यक्ष ।

१७ साव्यवहारिकप्रत्यक्ष किसको कहते हैं ?

१७ जो इन्द्रिय और मनकी सहायतासे पदार्थको एकदेश स्पष्ट जाने ।

१८ पारमार्थिकप्रत्यक्ष किसको कहते हैं ?

१८ जो बिना किसीकी सहायताके पदार्थको स्पष्ट जाने ।

१९ पारमार्थिकप्रत्यक्षके कितने भेद हैं ?

१९ दो भेद हैं—एक विकलपारमार्थिक दूसरा सकलपारमार्थिक ।

२० विकलपारमार्थिकप्रत्यक्ष किसको कहते हैं?

२० जो रूपी पदार्थोंको बिना किसीकी सहाय- स्पष्ट जाने ।

२१ विकलपारमार्थिकप्रत्यक्षके कितने भेद हैं?

२१ दो भेद हैं–एक अवधिज्ञान दूसरा मन–पर्ययज्ञान ।

२२ अवधिज्ञान किसको कहते हैं ?

२२ द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी मर्यादा लिए जो रूपी पदार्थको स्पष्ट जाने ।

२३ मनःपर्ययज्ञान किसको कहते हैं ?

२३ द्रव्य क्षेत्र काल भावकी मर्यादा लिए हुए जो दूसरेके मनमें तिष्ठते हुए रूपी पदार्थको स्पष्ट जाने ।

२४ सकलपारमार्थिकप्रत्यक्ष किसको कहते हैं?

२४ केवलज्ञानको ।

२५ केवलज्ञान किसे कहते हैं ?

२५ जो त्रिकालवर्ती समस्त पदार्थोंको युगपत् (एकसाथ) स्पष्ट जाने ।

२६ परोक्षप्रमाण किसे कहते हैं ?

२६ जो दूसरेकी सहायतासे पदार्थको स्पष्ट जाने ।

२७ परोक्ष प्रमाणके कितने भेद हैं ?

२७ पाँच हैं–स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान और आगम।

२८ स्मृति किसको कहते हैं ?

२८ पहले अनुभव किये हुए पदार्थके याद करनेको स्मृति कहते हैं।

२९ प्रत्यभिज्ञान किसको कहते है ?

२९ स्मृति और प्रत्यक्षके विषयभूत पदार्थोंमें जोडरूप ज्ञानको प्रत्यभिज्ञान कहते हैं। जैसे–यह वही मनुष्य है, जिसे कल देखा था।

३० प्रत्यभिज्ञानके कितने भेद हैं ?

३० एकत्वप्रत्यभिज्ञान, सादृश्यप्रत्यभिज्ञान आदि अनेक भेद हैं।

३१ एकत्वप्रत्यभिज्ञान किसको कहते हैं ?

३१ स्मृति और प्रत्यक्षके विषयभूत पदार्थमें ,। दिखाते हुए जोडरूप ज्ञानको एकत्वप्रत्य

भिज्ञान कहते हैं । जैसे—यह वही मनुष्य है, जिसे कल देखा था ।

३२ सादृश्यप्रत्यभिज्ञान किसको कहते हैं ?

३२ स्मृति और प्रत्यक्षके विषयभूत पदार्थोंमें सादृश्य दिखाते हुए जोडरूप ज्ञानको सादृश्यप्रत्यभिज्ञान कहते हैं । जैसे—यह गौ गवयके (रोझके) सदृश है ।

३३ तर्क किसको कहते हैं ?

३३ व्याप्तिके ज्ञानको तर्क कहते हैं ।

३४ व्याप्ति किसको कहते हैं ?

३४ अविनाभावसम्बन्धको व्याप्ति कहते हैं ।

३५ अविनाभावसम्बन्ध किसको कहते हैं ?

३५ जहाँ जहाँ साधन (हेतु) होय, वहाँ वहाँ साध्यका होना और जहाँ जहाँ साध्य नहीं होय, वहाँ वहाँ साधनके भी न होनेको अविनाभावसम्बन्ध कहते हैं । जैसे—जहाँ जहाँ धूम है, वहाँ वहाँ अग्नि है । और जहाँ जहाँ अग्नि नहीं है, वहाँ वहाँ धूम भी नहीं है ।

३६ साधन किसको कहते हैं ?

३६ जो साध्यके बिना न होवे । जैसे--अग्निका हेतु (साधन) धूम ।

३७ साध्य किसको कहते हैं ?

३७ इष्ट अबाधित असिद्धको साध्य कहते हैं ।

३८ इष्ट किसको कहते हैं ?

३८ वादी और प्रतिवादी जिसको सिद्ध करना चाहे, उसको इष्ट कहते हैं ।

३९ अबाधित किसको कहते है ?

३९ जो दूसरे प्रमाणसे बाधित न हो । जैसे--अग्निका ठंडापन प्रत्यक्षप्रमाणसे बाधित है, इस कारण यह ठंडापन साध्य नहीं हो सकता ।

४० असिद्ध किसको कहते हैं ?

४० जो दूसरे प्रमाणसे सिद्ध न हो, उसे असिद्ध कहते हैं । अथवा जिसका निश्चय न हो उसे कहते हैं ।

४१ अनुमान किसको कहते हैं ?

४१ साधनसे साध्यके ज्ञानको अनुमान कहते हैं।

४२ हेत्वाभास (साधनाभास) किसको कहते हैं?

४२ सदोष हेतुको।

४३ हेत्वाभासके कितने भेद हैं ?

४३ चार हैं—असिद्ध, विरुद्ध, अनैकान्तिक (व्यभिचारी) और अकिंचित्कर।

४४ असिद्धहेत्वाभास किसको कहते हैं ?

४४ जिस हेतुके अभावका (गैरमौजूदगीका) निश्चय हो, अथवा उसके सद्भावमें (मौजूदगीमें) संदेह (शक) हो, उसको असिद्धहेत्वाभास कहते हैं। जैसे "शब्द नित्य है। क्योंकि—नेत्रका विषय है।" परंतु शब्द कर्णका विषय है, नेत्रका नहीं हो सकता, इस कारण "नेत्रका विषय" यह हेतु असिद्धहेत्वाभास है।

४५ विरुद्धहेत्वाभास किसको कहते हैं ?

४५ साध्यसे विरुद्ध पदार्थके साथ जिसकी व्याप्ति हो, उसको विरुद्धहेत्वाभास कहते हैं । जैसे– " शब्द नित्य है । क्योंकि–परिणामी है । " इस अनुमानमें परिणामीकी व्याप्ति अनित्यके साथ है, नित्यके साथ नहीं है । इसलिये नित्यत्वका " परिणामी हेतु " विरुद्धहेत्वाभास है ।

४६ अनैकान्तिक (व्यभिचारी) हेत्वाभास किसको कहते हैं ?

४६ जो हेतु पक्ष सपक्ष विपक्ष इन तीनोंमे व्यापे, उसको अनैकान्तिकहेत्वाभास कहते हैं । जैसे–" इस कोठेमें धूम है । क्योंकि–इसमें अग्नि है । " यहाँ अग्नि हेतु पक्ष सपक्ष विपक्ष तीनोंमें व्यापक होनेसे अनैकान्तिकहेत्वाभास है ।

४७ पक्ष किसको कहते हैं ?

४७ जहाँ साध्यके रहनेका शक हो । जैसे ऊपरदृष्टांतमें कोठा ।

४८ सपक्ष किसको कहते हैं ?

४८ जहाँ साध्यके सद्भावका (मौजूदगीका) निश्चय हो। जैसे–धूमका सपक्ष गीले ईंधनसे मिली हुई अग्निवाला रसोईघर है।

४९ विपक्ष किसको कहते हैं ?

४९ जहाँ साध्यके अभावका (गैरमोजूदगीका) निश्चय हो। जैसे–अग्निसे तपा हुआ लोहेका गोला।

५० अकिञ्चित्करहेत्वाभास किसको कहते हैं ?

५० जो हेतु कुछ भी कार्य (साध्यकी सिद्धि) करनेमें समर्थ न हो।

५१ अकिंचित्करहेत्वाभासके कितने भेद हैं ?

५१ दो हैं–एक सिद्धसाधन, दूसरा बाधितविषय।

५२ सिद्धसाधन किसको कहते हैं ?

५२ जिस हेतुका साध्य सिद्ध हो। जैसे–अग्नि गर्म है। क्योंकि–स्पर्श इन्द्रियसे ऐसा ही प्रतीत होता है।

५३ बाधितविषयहेत्वाभास किसको कहते हैं ?

५३ जिस हेतुके साध्यमें दूसरे प्रमाणसे बाधा आवे।

५४ बाधितविषयहेत्वाभासके कितने भेद हैं?

५४ प्रत्यक्षबाधित, अनुमानबाधित, आगमबाधित, स्ववचनबाधित, आदि अनेक भेद हैं।

५५ प्रत्यक्षबाधित किसको कहते हैं?

५५ जिसके साध्यमें प्रत्यक्षसे बाधा आवे। जैसे "अग्नि ठंडी है। क्योंकि यह द्रव्य है।" यह हेतु प्रत्यक्षबाधित है।

५६ अनुमानबाधित किसको कहते हैं?

५६ जिसके साध्यमें अनुमानसे बाधा आवे। जैसे "घास आदि कर्त्ताकी बनाई है। क्योंकि–ये कार्य हैं।" परंतु इसमें इस अनुमानसे बाधा आती है कि घास आदि किसीकी बनाई हुई नहीं हैं। क्योंकि इनका बनानेवाला शरीरधारी नहीं है। जो जो शरीर धारीकी बनाई हुई नहीं वे वे वस्तुएँ कर्त्ताकी बनाई हुई नहीं हैं।

५७ आगमबाधित किसको कहते हैं ?

५७ शास्त्रसे जिसका साध्य बाधित हो, उसको आगमबाधित कहते हैं। जैसे–पाप सुखका देनेवाला है। क्योंकि यह कर्म है। जो जो कर्म होते हैं, वे वे सुखके देनेवाले होते हैं। जैसे–पुण्यकर्म। इसमें शास्त्रसे बाधा आती है। क्योंकि शास्त्रमें पापको दुःख देनेवाला लिखा है।

५८ स्ववचनबाधित किसको कहते हैं ?

५८ जिसके साध्यमें अपने वचनसे ही बाधा आवे। जैसे–मेरी माता वन्ध्या है। क्योंकि पुरुषका सयोग होनेपर भी उसके गर्भ नहीं रहता।

५९ अनुमानके कितने अग हैं ?

५९ पाँच हैं–प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन।

६० प्रतिज्ञा किसको कहते हैं ?

६० पक्ष और साध्यके कहनेको प्रतिज्ञा कहते हैं। जैसे–"इस पर्वतमें अग्नि है।"

६१ हेतु किसको कहते हैं ?

६१ साधनके वचनको (कहनको) हेतु
है। जैसे-" क्योंकि यह धूमवान् है।"

६२ उदाहरण किसको कहते हैं ?

६२ व्याप्ति पूर्वक दृष्टान्तके कहनेया उद
कहते हैं। जैसे-जहाँ जहाँ धूम है, वहाँ
अग्नि है। जैसे रसोईका घर। और जहाँ जहाँ
नहीं है, वहाँ वहाँ धूम भी नहीं है। जैसे ताला

६३ दृष्टान्त किसको कहते हैं ?

६३ जहाँपर साध्य और साधनकी मौजूदगी
गैरमौजूदगी दिखाई जाय। जैसे-रसोईका
अथवा तालाब।

६४ दृष्टान्तके कितने भेद हैं ?

६४ दो हैं-एक अन्वयदृष्टान्त दूसरा व्य
दृष्टान्त।

६५ अन्वयदृष्टान्त किसको कहते हैं ?

६५ जहाँ साधनकी मौजूदगीमें साध्यकी मौजूदगी दिखाई जाय। जैसे—रसोईके घरमें धूमका सद्भाव होनेपर अग्निका सद्भाव दिखाया गया।

६६ व्यतिरेकदृष्टान्त किसको कहते हैं ?

६६ जहाँ साध्यकी गैरमौजूदगीमें साधनकी गैर-मौजूदगी दिखाई जाय। जैसे—तालाव।

६७ उपनय किसको कहते हैं ?

६७ पक्ष और साधनमें दृष्टान्तकी सदृशता दिखानेको उपनय कहते है। जैसे—यह पर्वत भी वैसा ही धूमवान् है।

६८ निगमन किसको कहते हैं ?

६८ नतीजा निकालकर प्रतिज्ञाके दोहरानेको निगमन कहते हैं। जैसे—इसलिये यह पर्वत भी अग्निमान् है।

६९ हेतुके कितने भेद हैं ?

६९ तीन हैं—केवलान्वयी, केवलव्यतिरेकी, अन्वय-व्यतिरेकी।

७० केवलान्वयी हेतु किसको कहते हैं ?
७० जिस हेतुमें सिर्फ अन्वयदृष्टान्त हो । ज
जीव अनेकान्तस्वरूप है । क्योंकि सत्स्वरूप
जो जो सत्स्वरूप होता है, वह वह अनेक
स्वरूप होता है । जैसे–पुद्गलादिक ।
७१ केवलव्यतिरेकी हेतु किसको कहते
७१ जिसमें सिर्फ व्यतिरेकी दृष्टान्त पाया ज
जैसे जिन्दा शरीरमें आत्मा है । क्योंकि इसमें श
च्छ्वास है । जहाँ जहाँ आत्मा नहीं होता, वहाँ
श्वासोच्छ्वास भी नहीं होता । जैसे–चौकी वगै
७२ अन्वयव्यतिरेकी हेतु किसको कहते
७२ जिसमें अन्वयी दृष्टान्त और व्यतिरेकी द
दोनो हों । जैसे पर्वतमें अग्नि है । क्योंकि
धूम है । जहाँ जहाँ धूम है, वहाँ वहाँ
होती है । जैसे रसोईका घर । जहाँ जहाँ
नहीं है, वहाँ वहाँ धूम भी नहीं है । जैसे ता

७३ आगमप्रमाण किसको कहते हैं ?

७३ आप्तके वचन आदिसे उत्पन्न हुए पदार्थके ज्ञानको।

७४ आप्त किसको कहते हैं ?

७४ परमहितोपदेशक सर्वज्ञदेवको आप्त कहते हैं।

७५ प्रमाणका विषय क्या है ?

७५ सामान्य अथवा धर्मी तथा विशेष अथवा धर्म दोनों अशोंका समूहरूप वस्तु प्रमाणका विषय है।

७६ विशेष किसको कहते हैं ?

७६ वस्तुके किसी खास अश अथवा हिस्सेको विशेष कहते हैं।

७७ विशेषके कितने भेद हैं ?

७७ दो हैं—एक सहभावी विशेष, दूसरा क्रमभावी विशेष।

७८ सहभावी विशेष किसको कहते हैं ?

७८ वस्तुके पूरे हिस्से और उसकी सब अव-

स्याओंमें रहनेवाले विशेषको सहभावी विशेष अथवा गुण कहते हैं।

७९ क्रमभावी विशेष किसको कहते हैं ?

७९ क्रमसे होनेवाले वस्तुके विशेषको क्रमभावी विशेष अथवा पर्याय कहते हैं।

८० प्रमाणाभास किसको कहते हैं ?

८० मिथ्याज्ञानको प्रमाणाभास कहते हैं।

८१ प्रमाणाभास कितने हैं ?

८१ तीन हैं—संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय।

८२ संशय किसको कहते हैं ?

८२ विरुद्ध अनेक कोटी स्पर्श करनेवाले ज्ञानको संशय कहते हैं। जैसे—यह सीप है या चांदी ?

८३ विपर्यय किसको कहते हैं ?

८३ विपरीत एक कोटीके निश्चय करनेवाले ज्ञानको विपर्यय कहते हैं। जैसे—सीपको चांदी जानना।

८४ अनध्यवसाय किसको कहते हैं ?

४ "यह क्या है ?" ऐसे प्रतिभासको अन-
ध्यवसाय कहते हैं। जैसे मार्ग चलते हुएके तृण
गैरहका ज्ञान।

८५ नय किसको कहते हैं ?

८५ वस्तुके एक देशको जाननेवाले ज्ञानका नय
कहते हैं।

८६ नयके कितने भेद हैं ?

८६ दो हैं, एक निश्चयनय दूसरा व्यवहारनय
अथवा उपनय।

८७ निश्चयनय किसको कहते हैं ?

८७ वस्तुके किसी असली अंशके ग्रहण करने
वाले ज्ञानको निश्चयनय कहते हैं। जैसे–मिट्टीके
घडेको मिट्टीका घडा कहना।

८८ व्यवहारनय किसको कहते हैं ?

८८ किसी निमित्तके वगस एक पदार्थको दूसरे
पदार्थरूप जाननेवाले ज्ञानको व्यवहारनय कहते

है। जैसे–मिट्टीके घडेको घीके रहनेके नि
घीका घडा कहना।

८९ निश्चयनयके कितने भेद हैं ?

८९ दो हैं–एक द्रव्यार्थिक नय दूसरा प
र्थिक नय।

९० द्रव्यार्थिकनय किसको कहते हैं ?

९० जो द्रव्य अर्थात् सामान्यको ग्रहण करे

९१ पर्यायार्थिकनय किसको कहते हैं ?

९१ जो विशेषको (गुण अथवा पर्या
विषय करे।

९२ द्रव्यार्थिकनयके कितने भेद हैं ?

९२ तीन हैं–नैगम, संग्रह, व्यवहार।

९३ नैगमनय किसको कहते हैं ?

९३ दो पदार्थोंमेंसे एकको गौण और द
प्रधान करके भेद अथवा अभेदको विषय

ग्राला ज्ञान नैगमनय है, तथा पदार्थके सकल्पको ग्रहण करनेवाला ज्ञान नैगमनय है। जैसे—कोई आदमी रसोईमें चावल लेकर चुनता था। किसीने उससे पूछा कि क्या कर रहे हो? तब उसने कहा कि भात बना रहा हूँ। यहाँ चावल और भातमें अभेदविवक्षा है। अथवा चावलोंमें भातका सकल्प है।

९४ सग्रहनय किसको कहते हैं?

९४ अपनी जातिका विरोध नहीं करके अनेक विषयोंका एकपनेसे जो ग्रहण करे, उसको सग्रहनय कहते हैं। जैसे—जीवके कहनेसे चारो गतिके सब जीवोंका ग्रहण होता है।

९५ व्यवहारनय किसको कहते हैं?

९५ जो सग्रहनयसे ग्रहण किये हुए पदार्थोंका विधिपूर्वक भेद करे, सो व्यवहारनय है। जैसे जीवके भेद त्रस और स्थावर आदि करना।

९६ पर्यायार्थिकनयके कितने भेद हैं?

९६ चार हैं—ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ, और एवभूत।

१०४ उपचरितव्यवहार अथवा उपचरित असद्भूतव्यवहारनय किसको कहते हैं ?
१०४ अत्यन्त भिन्न पदार्थोंको जो अभेदरूप ग्रहण करे। जैसे हाथी घोडा महल मकान मेरे हैं इत्यादि।

१०५ निक्षेप किसको कहते हैं ?
१०५ युक्तिकरके सुयुक्त मार्ग होते हुए कार्यके वशसे नाम स्थापना द्रव्य और भावमें पदार्थके स्थापनको निक्षेप कहते हैं।

१०६ निक्षेपके कितने भेद हैं ?
१०६ चार हैं—नामनिक्षेप, स्थापनानिक्षेप, द्रव्यनिक्षेप और भावनिक्षेप।

१०७ नामनिक्षेप किसको कहते हैं ?
१०७ जिस पदार्थमें जो गुण नहीं है, उसको उस नामसे कहना। जैसे किसीने अपने लडकेका नाम हाथीसिंह रक्खा है। परन्तु उसमें हाथी और सिंह दोनोंके गुण नहीं हैं।

१०८ स्थापनानिक्षेप किसको कहते हैं ?

१०८ साकार अथवा निराकार पदार्थमें वह यह है, इस प्रकार अवधान करके निवेश करनेको स्थापना निक्षेप कहते हैं । जैसे—पार्श्वनाथके प्रतिबिम्बको पार्श्वनाथ कहना अथवा सतरजके मोहरोंको हाथी घोडा कहना ।

१०९ नामनिक्षेप और स्थापनानिक्षेपमें क्या भेद है ?

१०९ नामनिक्षेपमें मूलपदार्थकी तरह सत्कार आदिककी प्रवृत्ति नहीं होती परन्तु स्थापनानिक्षेपमें होती है । जैसे—किसीने अपने लडकेका नाम पार्श्वनाथ रख लिया, तो उस लडकेका सत्कार पार्श्वनाथकी तरह नहीं होता । परन्तु पार्श्वनाथकी प्रतिमाका होता है ।

११० द्रव्यनिक्षेप किसको कहते हैं ?

११० पदार्थ [illegible] परिणामकी योग्यता

रखनेवाला हो उसको द्रव्यनिक्षेप कहते हैं—जैसे राजाके पुत्रको राजा कहना।

१११ भावनिक्षेप किसको कहते हैं?

१११ वर्तमानपर्यायसंयुक्त वस्तुको भावनिक्षेप कहते हैं। जैसे राज्य करते हुए पुरुषको राजा कहना।

इति प्रथमोऽध्यायः समाप्त ॥ १ ॥

द्वितीयोऽध्याय।

११२ द्रव्य किसको कहते हैं?

११२ गुणोंके समूहको द्रव्य कहते हैं।

११३ गुण किसको कहते हैं?

११३ द्रव्यके पूरे हिस्सेमें और उसकी सब हालतोंमें जो रहे, उसको गुण कहते हैं।

११४ गुणके कितने भेद हैं?

११४ दो हैं—एक सामान्य दूसरा विशेष।

११५ सामान्यगुण किसको कहते हैं?

११५ जो सब द्रव्योंमें व्यापे, उसको सामान्यगुण कहते हैं।

११६ विशेष गुण किसको कहते हैं ?

११६ जो सब द्रव्योंमें न व्यापे, उसको विशेष गुण कहते हैं।

११७ सामान्यगुण कितने हैं ?

११७ अनेक हैं—लेकिन उनमें ६ गुण मुख्य हैं। जैसे-अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व, प्रदेशवत्त्व।

११८ अस्तित्वगुण किसको कहते हैं ?

११८ जिस शक्तिके निमित्तसे द्रव्यका कभी नाश न हो, उसको अस्तित्व गुण कहते हैं।

११९ वस्तुत्वगुण किसको कहते हैं ?

११९ जिस शक्तिके निमित्तसे द्रव्यमें अर्थक्रिया हो, उसको वस्तुत्वगुण कहते हैं। जैसे-घडेकी अर्थक्रिया जलधारण है।

रखनेवाला हो उसको द्रव्यनिक्षेप कहते हैं—जैसे राजाके पुत्रको राजा कहना ।

१११ भावनिक्षेप किसको कहते हैं ?

१११ वर्तमानपर्यायसंयुक्त वस्तुको भावनिक्षेप कहते हैं । जैसे राज्य करते हुए पुरुषको राजा कहना ।

इति प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥ १ ॥

द्वितीयोऽध्यायः ।

११२ द्रव्य किसको कहते हैं ?

११२ गुणोंके समूहको द्रव्य कहते हैं ।

११३ गुण किसको कहते हैं ?

११३ द्रव्यके पूरे हिस्सेमें और उसकी सब हालतोंमें जो रहे, उसको गुण कहते हैं ।

११४ गुणके कितने भेद हैं ?

११४ दो हैं—एक सामान्य दूसरा विशेष ।

११५ सामान्यगुण किसको कहते हैं ?

११५ जो सब द्रव्योंमें व्यापे, उसको सामान्यगुण कहते हैं।

११६ विशेष गुण किसको कहते हैं?

११६ जो सब द्रव्योंमें न व्यापे, उसको विशेष गुण कहते हैं।

११७ सामान्यगुण कितने हैं?

११७ अनेक हैं—किन्तु उनमें ६ गुण मुख्य हैं। अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व, प्रदेशवत्व।

११८ अस्तित्वगुण किसको कहते हैं?

११८ जिस शक्तिके निमित्तसे द्रव्यका कभी नाश न हो, उसको अस्तित्व गुण कहते हैं।

११९ वस्तुत्वगुण किसको कहते हैं?

११९ जिस शक्तिके निमित्तसे द्रव्यमें अर्थक्रिया हो, उसको वस्तुत्वगुण कहते हैं। जैसे—घड़ेकी अर्थक्रिया जलधारण है।

१२० द्रव्यत्वगुण किसको कहते हैं ?
१२० जिस शक्तिके निमित्तसे द्रव्य सर्वदा एकसा न रहे और जिसकी पर्यायें (हालतें) हमेशा बदलती रहें।

१२१ प्रमेयत्वगुण किसको कहते हैं ?
१२१ जिस शक्तिके निमित्तसे द्रव्य किसी न किसीके ज्ञानका विषय हो, उसको प्रमेयत्व गुण कहते हैं।

१२२ अगुरुलघुत्वगुण किसको कहते हैं ?
१२२ जिस शक्तिके निमित्तसे द्रव्यकी द्रव्यता कायम रहे अर्थात् एक द्रव्य दूसरे द्रव्यरूप न परिणमे और एक गुण दूसरे गुणरूप न परिणमे तथा एक द्रव्यके अनेक या अनन्त गुण बिखरकर जुदे जुदे न हो जावें, उसको अगुरुलघुत्व गुण कहते हैं।

१२३ प्रदेशवत्वगुण किसको कहते हैं ?
१२३ जिस शक्तिके निमित्तसे द्रव्यका कुछ न कुछ आकार अवश्य हो।

१२४ द्रव्यके कितने भेद हैं ?

१२४ छह भेद हैं—जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल ।

१२५ जीवद्रव्य किसको कहते हैं ?

१२५ जिसमें चेतना गुण पाया जाय, उसको जीवद्रव्य कहते हैं ।

१२६ पुद्गल द्रव्य किसको कहते हैं ?

१२६ जिसमें स्पर्श, रस, गन्ध और वर्ण पाये जाँय ।

१२७ पुद्गल द्रव्यके कितने भेद हैं ?

१२७ दो भेद हैं—एक परमाणु दूसरा स्कन्ध ।

१२८ परमाणु किसको कहते हैं ?

१२८ सबसे छोटे पुद्गलको परमाणु कहते हैं ।

१२९ स्कन्ध किसको कहते हैं ?

१२९ अनेक परमाणुओंके बन्धको स्कन्ध कहते हैं ।

१३० बन्ध किसको कहते हैं ?

१३० अनेक चीजोंमें एकपनेका ज्ञान करानेवाले सम्बन्धविशेषको बन्ध कहते हैं ।

१३१ स्कन्धके कितने भेद हैं ?

१३१ आहारवर्गणा, तेजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा, कार्माणवर्गणा आदि २२ भेद हैं ।

१३२ आहारवर्गणा किसको कहते हैं ?

१३२ औदारिक, वक्रियिक, आहारक, इन तीन शरीररूप जो परिणमे, उसको आहारवर्गणा कहते हैं।

१३३ औदारिकशरीर किसको कहते हैं ?

१३३ मनुष्य, तिर्यंचके स्थूल शरीरको औदारिक शरीर कहते हैं ।

१३४ वैक्रियिकशरीर किसको कहते हैं ?

१३४ जो छोटे बड़े एक अनेक आदि नानाक्रियाओंको करे ऐसे देव और नारकियोंके शरीरको वैक्रियिकशरीर कहते है ।

१३५ आहारकशरीर किसको कहते हैं ?

१३५ छट्ठे गुणस्थानवर्ती मुनिके तत्त्वोंमें कोई शका होनेपर केवली या श्रुतकेवलीके निकट जानेके

लिये मस्तकमेंसे जो एक हाथका पुतला निकलता है, उसको आहारक शरीर कहते हैं।

१३६ तैजसवर्गणा किसको कहते हैं?

१३६ औदारिक और वैक्रियक शरीरोंको कान्ति देनेवाला तैजस शरीर जिस वर्गणासे बने, उसको तैसजवर्गणा कहते हैं।

१३७ भाषावर्गणा किसको कहते हैं?

१३७ जो शब्दरूप परिणमे, उसको भाषावर्गणा कहते हैं।

१३८ कार्माणवर्गणा किसको कहते हैं?

१३८ जो कार्माण शरीररूप परिणमे, उसको कार्माणवर्गणा कहते हैं।

१३९ कार्माणशरीर किसको कहते हैं?

१३९ ज्ञानावरणादि अष्टकर्मोंके समूहको कार्माण-शरीर कहते हैं।

१४० तैजस और कार्माणशरीर किसके होते हैं?

१४० सब ससारी जीवोंके तैजस और कार्माण शरीर होते हैं।

१४१ धर्मद्रव्य किसको कहते हैं ?

१४१ गतिरूप परिणमे जीव और पुद्गलको जो गमनमें सहकारी हो, उसको धर्मद्रव्य कहते हैं। जैसे–मछलीके लिये जल।

१४२ अधर्मद्रव्य किसको कहते हैं ?

१४२ गतिपूर्वक स्थितिरूप परिणमे जीव और पुद्गलको जो स्थितिमें सहकारी हो, उसको अधर्म द्रव्य कहते हैं।

१४३ आकाशद्रव्य किसको कहते हैं ?

१४३ जो जीवादिक पाँच द्रव्योंको ठहरनेके लिये जगह दे।

१४४ कालद्रव्य किसको कहते हैं ?

१४४ जो जीवादिक द्रव्योंके परिणमनमें सहकारी हो, उसको कालद्रव्य कहते हैं। जैसे–कुम्हारके चाकके घूमनेके लिये लोहेकी कीली।

१४५ कालद्रव्यके कितने भेद है ?

१४५ दो हैं—एक निश्चयकाल दूसरा व्यवहारकाल।

१४६ निश्चयकाल किसको कहते हैं ?

१४६ कालद्रव्यको निश्चयकाल कहते हैं।

१४७ व्यवहारकाल किसको कहते हैं ?

१४७ कालद्रव्यकी घडी दिन मास आदि पर्यायोंको व्यवहारकाल कहते हैं ?

१४८ पर्याय किसको कहते हैं ?

१४८ गुणके विकारको पर्याय कहते हैं।

१४९ पर्यायके कितने भेद हैं ?

१४९ दो हैं—व्यञ्जनपर्याय और अर्थपर्याय।

१५० व्यजनपर्याय किसको कहते हैं ?

१५० प्रदेशवत्त्व गुणके विकारको व्यजनपर्याय कहते हैं।

१५१ व्यजनपर्यायके कितने भेद हैं ?

१५१ दो हैं—स्वभावव्यजनपर्याय और विभावव्यजनपर्याय।

१५२ स्वभावव्यंजनपर्याय किसको कहते हैं?

१५२ विना दूसरे निमित्तके जो व्यंजनपर्याय हो। जैसे—जीवकी सिद्धपर्याय।

१५३ विभावव्यंजनपर्याय किसको कहते हैं?

१५३ दूसरे निमित्तसे जो व्यंजनपर्याय हो, उसको विभावव्यंजनपर्याय कहते हैं। जैसे—जीवकी नर नारकादि पर्याय।

१५४ अर्थपर्याय किसको कहते हैं?

१५४ प्रदेशवत्त्व गुणके सिवाय अन्य समस्त गुणोंके विकारको अर्थपर्याय कहते हैं।

१५५ अर्थपर्यायके कितने भेद हैं?

१५५ दो हैं—स्वभावअर्थपर्याय और विभावअर्थपर्याय।

१५६ स्वभावअर्थपर्याय किसको कहते हैं?

१५६ विना दूसरे निमित्तके जो अर्थपर्याय हो, उसको स्वभावअर्थपर्याय कहते हैं। जैसे—जीवका केवलज्ञान।

१५७ विभावअर्थपर्याय किसको कहते हैं ?

१५७ पर निमित्तसे जो अर्थपर्याय हो, उसको विभावअर्थपर्याय कहते हैं। जैसे--जीवके रागद्वेष आदिक।

१५८ उत्पाद किसको कहते हैं ?

१५८ द्रव्यमें नवीन पर्यायकी प्राप्तिको उत्पाद कहते हैं।

१५९ व्यय किसको कहते हैं ?

१५९ द्रव्यकी पूर्वपर्यायके त्यागको व्यय कहते हैं।

१६० ध्रौव्य किसको कहते हैं ?

१६० प्रत्यभिज्ञानको कारणभूत द्रव्यकी किसी अवस्थाकी नित्यताको ध्रौव्य कहते हैं।

१६१ द्रव्योंमें विशेष गुण कौन कौनसे हैं ?

१६१ जीवद्रव्यमें चेतना, सम्यक्त्व, चारित्र इत्यादि। पुद्गलद्रव्यमें स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण, धर्मद्रव्यमें गतिहेतुत्व वगैरह। अधर्मद्रव्यमें स्थिति-

हेतुत्व वगैरह। आकाशद्रव्यमें अवगाहनहेतुत्व और कालद्रव्यमें परिणमनहेतुत्व वगैरह।

१६२ आकाशके कितने भेद हैं?

१६२ आकाश एक ही अखंड द्रव्य है।

१६३ आकाश कहाँपर हैं?

१६३ आकाश सर्वव्यापी है।

१६४ लोकाकाश किसको कहते हैं?

१६४ जहाँतक जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, काल ये पाँच द्रव्य हैं उसको लोकाकाश कहते हैं।

१६५ अलोकाकाश किसको कहते हैं?

१६५ लोकसे बाहरके आकाशको अलोकाकाश कहते हैं।

१६६ लोककी मोटाई, ऊँचाई, चौड़ाई कितनी हैं?

१६६ लोककी मोटाई उत्तर और दक्षिण दिशामें सब जगह सात राजू है, चौड़ाई पूर्व और पश्चिम

दिशामें मूलमें (नीचे जडमें) सात राजू है। ऊपर क्रमसे घटकर सात राजूकी ऊँचाईपर चौडाई एक राजू है। फिर क्रमसे बढकर साढे दश राजूकी ऊँचाईपर चौडाई पाँच राजू है। फिर क्रमसे घटकर चौदहराजूकी ऊँचाईपर एक राजू चौडाई है। और ऊर्ध्व और अधोदिशामें ऊँचाई चौदह राजू है।

१६७ धर्म तथा अधर्मद्रव्य खण्डरूप हैं किंवा अखडरूप हैं और इनकी स्थिति कहाँ है?

१६७ धर्म और अधर्म दोनों एक एक अखड द्रव्य हैं और दोनों ही समस्त लोकाकाशमें व्याप्त हैं।

१६८ प्रदेश किसको कहते हैं ?

१६८ आकाशके जितने हिस्सेको एक पुद्गल परमाणु रोके, उसको प्रदेश कहते हैं।

१६९ कालद्रव्य कितने भेदरूप हैं और उनकी स्थिति कहाँ है?

१६९ लोकाकाशके जितने प्रदेश हैं, उतने ही

कालद्रव्य हैं और लोकाकाशके एक एक प्रदेशपर एक एक कालद्रव्य (कालाणु) स्थित है ।

१७० पुद्गलद्रव्य कितने और उनकी स्थिति कहाँ है ?

१७० पुद्गलद्रव्य अनन्तानन्त हैं और ये समस्त लोकाकाशमें भरे हुए हैं ।

१७१ जीवद्रव्य कितने और कहाँ हैं ?

१७१ जीवद्रव्य अनन्तानन्त हैं और वे समस्त लोकाकाशमें भरे हुए हैं ।

१७२ एक जीव कितना बडा है ?

१७२ एक जीव प्रदेशोंकी अपेक्षा लोकाकाशके बराबर है, परन्तु सङ्कोच विस्तारके कारण अपने शरीरके प्रमाण है । और मुक्तजीव अन्तके शरीर प्रमाण है ।

१७३ लोकाकाशके बराबर कौनसा जीव है ?

१७३ मोक्ष जानेसे पहले समुद्धात करनेवाला जीव लोकाकाशके बराबर होता है ।

१७४ समुद्धात किसको कहते हैं ?

१७४ मूलशरीरको बिना छोडे जीवके प्रदेशोंके बाहर निकलनेको समुद्धात कहते हैं।

१७५ अस्तिकाय किसको कहते हैं ?

१७५ बहुप्रदेशी द्रव्यको अस्तिकाय कहते हैं।

१७६ अस्तिकाय कितने हैं ?

१७६ पाँच हैं—जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और आकाश। इन पाँचों द्रव्योंको पञ्चास्तिकाय कहते हैं। कालद्रव्य बहुप्रदेशी नहीं है, इसलिये यह अस्तिकाय भी नहीं है।

१७७ यदि पुद्गलपरमाणु एकप्रदेशी है, तो वह अस्तिकाय कैसे हुआ ?

१७७ पुद्गलपरमाणु शक्तिकी अपेक्षासे अस्तिकाय है। अर्थात् स्कधरूपमें होकर बहुप्रदेशी हो जाता है, इसलिये उपचारसे अस्तिकाय है।

१७८ अनुजीवी गुण किसको कहते है ?

१७८ भावस्वरूप गुणोंको अनुजीवी गुण कहते हैं। जैसे सम्यक्त्व, चारित्र, सुख, चेतना, स्पर्श, रस, गंध वर्णादिक।

१७९ प्रतिजीवी गुण किसको कहते हैं ?

१७९ वस्तुके अभावस्वरूप धर्मको प्रतिजीवी गुण कहते हैं। जैसे—नास्तित्व, अमूर्त्तत्व, अचेतनत्व वगैरह।

१८० अभाव किसको कहते हैं ?

१८० एक पदार्थकी दूसरे पदार्थमें गैरमौजूदगीको अभाव कहते हैं।

१८१ अभावके कितने भेद हैं ?

१८१ चार हैं—प्रागभाव, प्रध्वमाभाव, अन्योन्याभाव और अत्यन्ताभाव।

१८२ प्रागभाव किसको कहते हैं ?

१८२ वर्त्तमान पर्यायका पूर्व पर्यायमें जो अभाव, उसको प्रागभाव कहते हैं।

१८३ प्रध्वसाभाव किसको कहते हैं ?

१८३ आगामी पर्यायमें वर्तमान पर्यायके अभावको प्रध्वसाभाव कहते हैं।

१८४ अन्योन्याभाव किसको कहते हैं ?

१८४ पुद्गलद्रव्यकी एक वर्तमान पर्यायमें दूसरे पुद्गलकी वर्त्तमान पर्यायके अभावको अन्योन्याभाव कहते हैं।

१८५ अत्यन्ताभाव किसको कहते हैं ?

१८५ एक द्रव्यमें दूसरे द्रव्यके अभावको अत्यन्ताभाव कहते हैं।

अनुजीवीगुण।

१८६ जीवके अनुजीवी गुण कौनसे हैं ?

१८६ चेतना, सम्यक्त्व, चारित्र, सुख, वीर्य, भव्यत्व, अभव्यत्व, जीवत्व, वैभाविक, कर्तृत्व, भोक्तृत्व, वगैरह अनन्तगुण हैं।

१८७ जीवके प्रतिजीवी गुण कौनसे हैं ?

१८७ अव्याबाध, अवगाह, अगुरुलघु, सूक्ष्मत्व, नास्तित्व इत्यादि ।

१८८ चेतना किसको कहते हैं ?

१८८ जिसमें पदार्थोंका प्रतिभास (जानना) हो उसको चेतना कहते हैं ।

१८९ चेतनाके कितने भेद हैं ?

१८९ दो हैं—दर्शनचेतना और ज्ञानचेतना ।

१९० दर्शनचेतना किसको कहते हैं ?

१९० जिसमें महासत्ताका (सामान्य) प्रतिभास (निराकार झलक) हो, उसको दर्शनचेतना कहते हैं ।

१९१ महासत्ता किसको कहते हैं ?

१९१ समस्त पदार्थोंके अस्तित्वगुणके ग्रहण कर नेवाली सत्ताको महासत्ता कहते हैं ।

१९२ ज्ञानचेतना किसको कहते हैं ?

१९२ अवान्तरसत्ताविशिष्ट विशेषपदार्थको विषय करनेवाली चेतनाको ज्ञानचेतना कहते हैं ।

१९३ अवान्तरसत्ता किसको कहते हैं ?
१९३ किसी विवक्षित पदार्थकी सत्ताको अवान्तर सत्ता कहते हैं।

१९४ दर्शनचेतनाके कितने भेद हैं ?
१९४ चार हैं—चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन, अवधिदर्शन और केवलदर्शन।

१९५ ज्ञानचेतनाके कितने भेद हैं ?
१९५ पाँच हैं—मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान।

१९६ मतिज्ञान किसको कहते हैं ?
१९६ इन्द्रिय और मनकी सहायतासे जो ज्ञान हो, उसको मतिज्ञान कहते हैं।

१९७ मतिज्ञानके कितने भेद हैं ?
१९७ दो हैं—सांव्यवहारिकप्रत्यक्ष और परोक्ष।

१९८ परोक्षमतिज्ञानके कितने भेद हैं ?
१९८ चार हैं—स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क और अनुमान।

२०७ अव्यक्त पदार्थके अवग्रहको व्यञ्जनावग्रह कहते हैं ।

२०८ व्यजनावग्रह अर्थावग्रहकी तरह सब इन्द्रियों और मनद्वारा होता है या कैसे ?

२०८ व्यञ्जनावग्रह चक्षु और मनके सिवाय बाकी की सब इन्द्रियोंसे होता है ।

२०९ व्यक्त और अव्यक्त पदार्थोंके कितने भेद हैं ?

२०९ हरएकके बारह बारह भेद हैं—बहु, एक, बहुविध, एकविध, क्षिप्र, अक्षिप्र, नि सृत, अनि सृत, उक्त, अनुक्त, ध्रुव, अध्रुव ।

२१० श्रुतज्ञान किसको कहते हैं ?

२१० मतिज्ञानमें जानेहुए पदार्थसे सबन्ध लिये हुए किसी दूसरे पदार्थके ज्ञानको श्रुतज्ञान कहते हैं । जैसे—'घट' शब्द सुननेके अनतर उत्पन्न । कम्बुग्रीवादिरूप घटका ज्ञान ।

२११ दर्शन कब होता है ?

२११ ज्ञानके पहले दर्शन होता है। बिना दर्शनके अल्पज्ञ जनोंके ज्ञान नहीं होता परंतु सर्वज्ञदेवके ज्ञान और दर्शन साथ होते हैं।

२१२ चक्षुर्दर्शन किसको कहते हैं ?

२१२ नेत्रजन्य मतिज्ञानसे पहले सामान्य प्रतिभास या अवलोकनको चक्षुर्दर्शन कहते हैं।

२१३ अचक्षुर्दर्शन किसको कहते हैं ?

२१३ चक्षुके (नेत्रके) सिवाय अन्य इन्द्रियों और मनसम्बन्धी मतिज्ञानके पहले होनेवाले सामान्य अवलोकनको अचक्षुर्दर्शन कहते हैं।

२१४ अवधिदर्शन किसको कहते हैं ?

२१४ अवधिज्ञानसे पहले होनेवाले सामान्य अवलोकनको अवधिदर्शन कहते हैं।

२१५ केवलदर्शन किसको कहते हैं ?

२१५ केवलज्ञानके साथ होनेवाले सामान्य अवलोकनको केवलदर्शन कहते हैं।

२१६ सम्यक्त्व गुण किसको कहते हैं ?
२१६ जिस गुणके प्रगट होनेपर अपने शुद्ध आत्माका प्रतिभास हो, उसको सम्यक्त्व गुण कहते हैं।

२१७ चारित्र किसको कहते हैं ?
२१७ बाह्य और आभ्यंतर क्रियाके निरोधसे प्रादुर्भूत आत्माकी शुद्धिविशेषको चारित्र कहते हैं।

२१८ बाह्यक्रिया किसको कहते हैं ?
२१८ हिंसा करना, झूठ बोलना, चोरी करना, मैथुन करना और परिग्रहसंचय करना।

२१९ आभ्यन्तरक्रिया किसको कहते हैं ?
२१९ योग और कषायको आभ्यन्तरक्रिया कहते हैं।

२२० योग किसको कहते हैं ?
२२० मन वचन कायके निमित्तसे आत्माके प्रदेशोंके चंचल होनेको योग कहते हैं।

२२१ कषाय किसको कहते हैं ?
२२१ क्रोधमानमायालोभरूप आत्माके विभाव परिणामोंको कषाय कहते हैं।

२२२ चारित्रके कितने भेद हैं ?

२२२ चार हैं–स्वरूपाचरणचारित्र, देशचारित्र, सकलचारित्र और यथाख्यातचारित्र।

२२३ स्वरूपाचरणचारित्र किसको कहते हैं ?

२२३ शुद्धात्मानुभवनसे अविनाभावी चरित्रविशेषको स्वरूपाचरणचारित्र कहते हैं।

२२४ देशचारित्र किसको कहते हैं ?

२२४ श्रावकके व्रतोंको देशचारित्र कहते हैं।

२२५ सकलचारित्र किसको कहते हैं ?

२२५ मुनियोंके व्रतोंको सकलचारित्र कहते हैं।

२२६ यथाख्यातचारित्र किसको कहते हैं ?

२२६ कषायोंके सर्वथा अभावसे प्रादुर्भूत आत्माकी शुद्धिविशेषको यथाख्यातचारित्र कहते हैं।

२२७ सुख किसको कहते हैं ?

२२७ आल्हादस्वरूप आत्माके परिणामविशेषको सुख कहते हैं।

२२८ वीर्य किसको कहते हैं ?
२२८ आत्माकी शक्तिको (बलको) वीर्य कहते हैं।
२२९ भव्यत्व गुण किसको कहते हैं ?
२२९ जिस शक्तिके निमित्तसे आत्माके सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र प्रगट होनेकी योग्यता हो, उसको भव्यत्व गुण कहते हैं ।
२३० अभव्यत्व गुण किसको कहते हैं ?
२३० जिस शक्तिके निमित्तसे आत्माके सम्यग्दर्शन, ज्ञान चारित्र प्रगट होनेकी योग्यता न हो, उसको अभव्यत्व गुण कहते हैं ।
२३१ जीवत्व गुण किसको कहते हैं ?
२३१ जिस शक्तिके निमित्तसे आत्मा प्राण धारण करे, उसको जीवत्व गुण कहते हैं ।
२३२ प्राण किसको कहते हैं ?
२३२ जिनके संयोगसे यह जीव जीवन अवस्थाको प्राप्त हो और वियोगसे मरण अवस्थाको प्राप्त हो, उनको प्राण कहते हैं ।

२३३ प्राणके कितने भेद हैं ?
२३३ दो हैं–द्रव्यप्राण और भावप्राण ।
२३४ द्रव्यप्राणके कितने भेद हैं ?
२३४ दश हैं–मन, वचन, काय, स्पर्शनइन्द्रिय, रसनाइन्द्रिय, घ्राणइन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, श्रोत्रइन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, आयु ।
२३५ भावप्राण किसको कहते हैं ?
२३५ आत्माकी जिस शक्तिके निमित्तसे इन्द्रियादिक अपने कार्यमें प्रवर्तें, उसे भावप्राण कहते हैं ।
२३६ किस जीवके कितने प्राण होते हैं ?
२३६ एकेंद्रिय जीवके चार प्राण–स्पर्शनेन्द्रिय, कायबल, श्वासोच्छ्वास और आयु । द्वीन्द्रियके छह प्राण–स्पर्शनेन्द्रिय, कायबल, श्वासोच्छ्वास, आयु, रसनेन्द्रिय, और वचन । त्रीन्द्रियके सात प्राण–पूर्वोक्त छह और घ्राणेन्द्रिय । चतुरिन्द्रियके आठ प्राण–पूर्वोक्त सात और एक चक्षुरिन्द्रिय । पचे-

२४४ दो हैं—ससारी और मुक्त ।

२४५ ससारी जीव किसको कहते हैं ?

२४५ कर्मसहित जीवको ससारी जीव कहते हैं।

२४६ मुक्त जीव किसको कहते हैं ?

२४६ कर्मरहित जीवको मुक्तजीव कहते हैं।

२४७ कर्म किसको कहते हैं ?

२४७ जीवके रागद्वेषादिक परिणामोंके निमित्तसे कार्माणवर्गणारूप जो पुद्गलस्कध जीवके साथ बधको प्राप्त होते हैं, उनको कर्म कहते हैं ।

२४८ बधके कितने भेद हैं ?

२४८ चार हैं—प्रकृतिबध, प्रदेशबध, स्थितिबध और अनुभागबध ।

२४९ इन चारों प्रकारोंके बधोंका कारण क्या है ?

२४९ प्रकृति और प्रदेशबध योगसे होते हैं। स्थिति और अनुभागबध कषायसे होते हैं ।

घात तो न हो परंतु चल मलादिक दोष उपजें उसको सम्यक्प्रकृति कहते हैं।

२६५ चारित्रमोहनीय किसको कहते हैं?

२६५ जो आत्माके चारित्र गुणको घाते, उसको चारित्र मोहनीय कहते हैं।

२६६ चारित्रमोहनीयके कितने भेद हैं?

२६६ दो हैं—कषाय और नोकषाय (किंचित्कषाय)।

२६७ कषायके कितने भेद हैं?

२६७ सोलह—अनंतानुबंधी क्रोध, अनंतानुबंधी मान, अनंतानुबंधी माया, अनंतानुबंधी लोभ, अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, अप्रत्याख्यानावरण मान, अप्रत्याख्यानावरण माया, अप्रत्याख्यानावरण लोभ, प्रत्याख्यानावरण क्रोध, प्रत्याख्यानावरण मान, प्रत्याख्यानावरण माया, प्रत्याख्यानावरण लोभ, संज्वलन क्रोध, संज्वलन मान, संज्वलन माया और संज्वलन लोभ।

२६८ नोकपायके कितने भेद हैं ?

२६८ नव-हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद ।

२६९ अनन्तानुबंधी क्रोध मान माया लोभ किनको कहते हैं ?

२६९ जो आत्माके स्वरूपाचरणचारित्रको घातें, उनको अनन्तानुबंधी क्रोध मान माया लोभ कहते हैं ।

२७० अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ किनको कहते हैं ?

२७० जो आत्माके देशचारित्रको घातें, उनको अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ कहते हैं।

२७१ प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ किनको कहते हैं ?

२७१ जो आत्माके सकलचारित्रको घाते, उनको प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ कहते हैं ।

२७२ सञ्ज्वलन क्रोध मान माया लोभ और नोकपाय किनको कहते हैं ?

अगुरुलघु, कर्म, एक उपघात कर्म एक परघात कर्म, एक आताप कर्म, एक उद्योत कर्म, दो विहायोगति (एक मनोज्ञ, दूसरा अमनोज्ञ) एक उच्छ्वास, एक त्रस, एक स्थावर, एक बादर, एक सूक्ष्म, एक पर्याप्त कर्म, एक अपर्याप्त कर्म, एक प्रत्येक नामकर्म, एक साधारण नामकर्म, एक स्थिर नामकर्म, एक अस्थिर नामकर्म, एक शुभ नाम कर्म, एक अशुभ नामकर्म, एक सुभग नामकर्म, एक दुर्भग नामकर्म, एक सुस्वर नामकर्म, एक दु स्वर नामकर्म, एक आदेय नामकर्म, एक अनादेय नामकर्म, एक यश कीर्ति नामकर्म, एक अयश कीर्ति नामकर्म, एक तीर्थंकर नामकर्म ।

२७७ गति नामकर्म किसको कहते हैं ?

२७७ जो कर्म जीवका आकार नारकी, तिर्यंच, मनुष्य और देवके समान बनावे ।

२७८ जाति किसको कहते हैं ?

२७८ अव्यभिचारी सदृशतासे एकरूप करनेवाले विशेषको जाति कहते हैं। अर्थात् वह सदृशधर्मवाले पदार्थोंको ही ग्रहण करता है।

२७९ जाति नामकर्म किसको कहते हैं?

२७९ जिस कर्मके उदयसे एकेंद्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिंद्रिय, पंचेंद्रिय कहा जाय।

२८० शरीर नामकर्म किसको कहते हैं?

२८० जिस कर्मके उदयसे आत्माके औदारिकादि शरीर बनें।

२८१ निर्माण नामकर्म किसको कहते हैं?

२८१ जिसके उदयसे अङ्गोपाङ्गकी ठीक ठीक रचना हो, उसको निर्माणकर्म कहते हैं।

२८२ बंधन नामकर्म किसको कहते हैं?

२८२ जिस कर्मके उदयसे औदारिकादिक शरीरोंके परमाणु परस्पर संबंधको प्राप्त हों, उसको बन्धन नामकर्म कहते हैं।

२८३ सघात नामकर्म किसको कहते हैं ?

२८३ जिस कर्मके उदयसे औदारिकादिक शरीरोंके परमाणु छिद्र रहित एकताको प्राप्त हों।

२८४ सस्थान नामकर्म किसको कहते हैं ?

२८४ जिस कर्मके उदयसे शरीरकी आकृति (शकल) बने, उसको सस्थान नामकर्म कहते हैं।

२८५ समचतुरस्र सस्थान किसको कहते हैं ?

२८५ जिस कर्मके उदयसे शरीरकी शकल ऊपर नीचे तथा बीचमें समभागसे बने।

२८६ न्यग्रोधपरिमडल किसको कहते हैं ?

२८६ जिस कर्मके उदयसे जीवका शरीर बडके वृक्षकी तरह हो, अर्थात् जिसके नाभिसे नीचेके अग छोटे और ऊपरके बडे हों।

२८७ स्वाति सस्थान किसको कहते हैं ?

२८७ ऊपरवाले जवाबसे बिलकुल विपरीत हो। जैसे साँपकी बामी।

२८८ कुब्जक संस्थान किसको कहते हैं ?
२८८ जिस कर्मके उदयसे कुबडा शरीर हो ।
२८९ वामन संस्थान किसको कहते हैं ?
२८९ जिस कर्मके उदयसे बौना शरीर हो ।
२९० हुंडक संस्थान किसको कहते हैं ?
२९० जिस कर्मके उदयसे शरीरके अंगोपांग किसी खास शकलके न हों ।
२९१ संहनन नामकर्म किसको कहते हैं ?
२९१ जिस कर्मके उदयसे हाडोंका बंधनविशेष हो, उसे संहनन नामकर्म कहते हैं ।
२९२ वज्रर्षभनाराच संहनन किसको कहते हैं?
२९२ जिस कर्मके उदयसे वज्रके हाड, वज्रके बेठन और वज्रकी ही कीलियाँ हों ।
२९३ वज्रनाराच संहनन किसको कहते हैं ?
२९३ जिस कर्मके उदयसे वज्रके हाड और वज्रकी कीली हों । परंतु बेठन वज्रके न हों ।

२९४ नाराच सहनन किसको कहते हैं ?
२०४ जिस कर्मके उदयसे बेठन और कीली सहित हाड हों।
२९५ अर्द्धनाराच सहनन किसको कहते हैं ?
२९५ जिसके उदयसे हाडोंकी सधि अर्द्धकीलित हों।
२९६ कीलक सहनन किसको कहते हैं ?
२९६ जिस कर्मके उदयसे हाड परस्पर कीलित हों।
२९७ असप्राप्तासृपाटिकसहनन किसको कहते हैं ?
२०७ जिस कर्मके उदयसे जुदे जुदे हाड नसोंसे बधे हों—परस्पर कीले हुए न हों।
२९८ वर्ण नामकर्म किसको कहते हैं ?
२९८ जिस कर्मके उदयसे शरीरमें रग हो।
२९९ गध नामकर्म किसको कहते हैं ?
२९९ जिस कर्मके उदयसे शरीरमें गध हो।
२ ० रस नामकर्म किसको कहते हैं ?

३०० जिस कर्मके उदयसे शरीरमें रस हो।

३०१ स्पर्श नामकर्म किसको कहते हैं ?

३०१ जिस कर्मके उदयसे शरीरमें स्पर्श हो।

३०२ आनुपूर्वी नामकर्म किसे कहते हैं ?

३०२ जिस कर्मके उदयसे आत्माके प्रदेश मरणके पीछे और जन्मसे पहले रास्तेमें अर्थात् विग्रहगतिमें मरणसे पहलेके शरीरके आकार रहें।

३०३ अगुरुलघु नामकर्म किसे कहते हैं ?

३०३ जिस कर्मके उदयसे शरीर, लोहेके गोलेकी तरह भारी और आकके तूलकी तरह हलका न हो।

३०४ उपघात नामकर्म किसे कहते हैं ?

३०४ जिस कर्मके उदयसे अपना ही घात करने वाले अंग हों।

३०५ परघात नामकर्म किसको कहते हैं ?

३०५ जिस कर्मके उदयसे दूसरेका घात करने वाले अंगोपांग हों।

३०६ आताप नामकर्म किसे कहते हैं ?

३०६ जिस कर्मके उदयसे आतापरूप शरीर हो। जैसे सूर्यका प्रतिबिम्ब ।

३०७ उद्योत नामकर्म किसे कहते है ?

३०७ जिस कर्मके उदयसे उद्योतरूप शरीर हो।

३०८ विहायोगति नामकर्म किसको कहते हैं?

३०८ जिस कर्मके उदयसे आकाशमें गमन हो। उसके शुभ और अशुभ ऐसे दो भेद हैं।

३०९ उच्छ्वास नामकर्म किसको कहते हैं ?

३०९ जिस कर्मके उदयसे श्वासोच्छ्वास हो ।

३१० त्रस नामकर्म किसको कहते हैं ?

३१० जिस कर्मके उदयसे द्वीन्द्रियादि जीवोंमें जन्म हो ।

३११ स्थावर नामकर्म किसको कहते हैं ?

३११ जिस कर्मके उदयसे पृथिवी अप तेज वायु और वनस्पतिमें जन्म हो ।

३१२ पर्याप्तिकर्म किसको कहते हैं ?

३१२ जिसके उदयसे अपने २ योग्य पर्याप्ति पूर्ण हो।

३१३ पर्याप्ति किसको कहते हैं ?

३१३ आहारवर्गणा, भाषावर्गणा, और मनोवर्गणाके परमाणुओंको शरीर इन्द्रियादिरूप परिणमावनेकी शक्तिकी पूर्णताको पर्याप्ति कहते हैं।

३१४ पर्याप्तिके कितने भेद हैं ?

३१४ छह।–प्रथम आहारपर्याप्ति (आहारवर्गणाके परमाणुओंको खल और रसभागरूप परिणमावनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको आहारपर्याप्ति कहते हैं,) दूसरी शरीरपर्याप्ति (जिन परमाणुओंको खलरूप परिणमाया था उनके हाड वगैरह कठिन अवयवरूप और जिनको रसरूप परिणमाया था उनको रुधिरादिक द्रवरूप परिणमावनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको शरीरपर्याप्ति कहते हैं), तीसरी इन्द्रियपर्याप्ति (आहारवर्गणाके परमाणुओंको इन्द्रियके आकार परिणमावनेको तथा इन्द्रियद्वारा विषय ग्रहण करनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको इन्द्रियपर्याप्ति कहते हैं), चौथी श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति

(आहारवर्गणाके परमाणुओंको श्वासोच्छ्वासरूप परिणमावनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति कहते हैं), पाँचवीं भाषापर्याप्ति (भाषावर्गणाके परमाणुओंको वचनरूप परिणमावनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको भाषा पर्याप्ति कहते हैं), छट्ठी मन पर्याप्ति (मनोवर्गणाके परमाणुओंको हृदयस्थानमें आठ पाँखुरीके कमलाकार मनरूप परिणमावनेको तथा उसके द्वारा यथावत् विचार करनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको मन पर्याप्ति कहते हैं)। एकेन्द्रियक भाषा और मनके बिना चार पर्याप्ति होती हैं। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असैनी पचेंद्रियके मनके बिना पाँच पर्याप्ति होती हैं। सैनी पचे न्द्रियके छहों पर्याप्ति होती हैं। इन सब पर्याप्तियोंके पूर्ण होनका काल अन्तर्मुहूर्त है। और एक एक पर्या ... है और सबका मिलकर भी

अंतर्मुहूर्त है। और पहलेसे दूसरेका तथा दूसरेसे तीसरेका इसी तरह उद्वेतपका काल क्रमसे बड़ा बड़ा अंतर्मुहूर्त है। अपने अपने योग्य पर्याप्तियोंका प्रारंभ तो एकदमसे होता है, किंतु पूर्णता क्रमसे होती है। जबतक किसी जीवकी शरीरपर्याप्ति पूर्ण तो न हो, लेकिन नियमसे पूर्ण होनेवाली हो, तबतक उस जीवको निर्वृत्यपर्याप्तक कहते हैं। और जिसकी शरीरपर्याप्ति पूर्ण हो गई हो, उसको पर्याप्तक कहते हैं। और जिसकी एक भी पर्याप्ति पूर्ण न हो तथा श्वासके अठारहवें भागमें ही मरण होनेवाला हो, उसको लब्ध्यपर्याप्तक कहते हैं।

३१५ अपर्याप्ति नामकर्म किसको कहते हैं?

३१५ जिस कर्मके उदयसे लब्ध्यपर्याप्तक अवस्था हो, उसको अपर्याप्ति नामकर्म कहते हैं।

३१६ प्रत्येक नामकर्म किसको कहते हैं?

३१६ जिसके उदयसे एक शरीरका एक स्वामी हो, उसको प्रत्येक नामकर्म कहते हैं।

३१७ साधारण नामकर्म किसे कहते हैं ?
३१७ जिस कर्मके उदयसे एक शरीरके अनेक जीव स्वामी (मालिक) हों, उसको साधारण नामकर्म कहते हैं।

३१८ स्थिर नामकर्म और अस्थिर नामकर्म किसको कहते हैं ?
३१८ जिस कर्मके उदयसे शरीरके धातु और उपधातु अपने अपने ठिकाने रहें, उसको स्थिर नामकर्म कहते हैं, और जिस कर्मके उदयसे शरीरके धातु और उपधातु अपने अपने ठिकाने न रहें, उसको अस्थिर नामकर्म कहते हैं।

३१९ शुभ नामकर्म किसको कहते हैं ?
३१९ जिस कर्मके उदयसे शरीरके अवयव सुंदर हों, उसको शुभ नामकर्म कहते हैं।

३२० अशुभ नामकर्म किसको कहते हैं ?
३२० जिसके उदयसे शरीरके अवयव सुंदर न हों, उसको अशुभ नामकर्म कहते हैं।

३२१ सुभग नामकर्म किसको कहते हैं ?
३२१ जिस कर्मके उदयसे दूसरे जीव अपनेसे प्रीति करें, उसको सुभग नामकर्म कहते हैं।

३२२ दुर्भग नामकर्म किसको कहते हैं ?
३२२ जिस कर्मके उदयसे दूसरे जीव अपनेसे दुश्मनी या वैर करें, उसको दुर्भग नामकर्म कहते हैं।

३२३ सुस्वर नामकर्म किसको कहते हैं ?
३२३ जिसके उदयसे अच्छा स्वर हो, उसको सुस्वर नामकर्म कहते हैं।

३२४ दुःस्वर नामकर्म किसको कहते हैं ?
३२४ जिस कर्मके उदयसे अच्छा स्वर न हो, उसको दुःस्वर नामकर्म कहते हैं।

३२५ आदेय नामकर्म किसे कहते हैं ?
३२५ जिस कर्मके उदयसे कांतिसहित शरीर उपजे, उसको आदेय नामकर्म कहते हैं।

३२६ अनादेय नामकर्म किसको कहते हैं ?

३२६ जिस कर्मके उदयसे कान्तिसहित शरीर न हो।

३२७ यश कीर्ति नामकर्म किसको कहते हैं?

३२७ जिस कर्मके उदयसे संसारमें जीवकी तारीफ हो, उसको यश कीर्ति नामकर्म कहते हैं।

३२८ अयश कीर्ति नामकर्म किसको कहते हैं?

३२८ जिस कर्मके उदयसे संसारमें जीवकी तारीफ न हो, उसे अयश कीर्ति नामकर्म कहते हैं।

३२९ तीर्थकर नाम

३२९

३३२ उच्च गोत्रकर्म किसको कहते हैं ?
३३२ जिस कर्मके उदयसे उच्च गोत्रमें जन्म हो।
३३३ नीच गोत्रकर्म किसको कहते हैं ?
३३ जिस कर्मके उदयसे नीच गोत्रमें जन्म हो।
३३४ अन्तराय कर्म किसको कहते हैं ?
३३४ जो दानादिकमें विघ्न डाले।
३३५ अन्तराय कर्मके कितने भेद हैं ?
३३५ पाँच—दानान्तराय, लाभान्तराय, भोगान्तराय, उपभोगान्तराय और वीर्यान्तराय। इनएकका अर्थ जो हरएकमें विघ्न डाले।
३३६ पुण्य कर्म किसको कहते हैं ?
३३६ जो जीवको इष्ट वस्तुकी प्राप्ति करावे।
३३७ पाप कर्म किसको कहते हैं ?
३३७ जो जीवको अनिष्ट वस्तुकी प्राप्ति करावे।
३३८ घातिया कर्म किसको कहते हैं ?
३३८ जो जीवके ज्ञानादिक अनुजीवी गुणोंको घातें, उन्हें घातिया कर्म कहते हैं।

३३९ अघातिया कर्म किसको कहते हैं ?

३३९ जो जीवके ज्ञानादिक अनुजीवीगुणोंको न घाते, उसे अघातिया कर्म कहते हैं ।

३४० सर्वघाति कर्म किसको कहते हैं ?

३४० जो जीवके अनुजीवी गुणोंको पूरे तौरसे घाते ।

३४१ देशघाति कर्म किसको कहते हैं ?

३४१ जो जीवके अनुजीवी गुणोंको एकदेश घाते, उसको देशघाति कर्म कहते हैं ।

३४२ जीवविपाकी कर्म किसको कहते हैं ?

३४२ जिसका फल जीवमें हो ।

३४३ पुद्गलविपाकी कर्म किसको कहते हैं ?

३४३ जिसका फल पुद्गलमें (शरीरमें) हो ।

३४४ भवविपाकी कर्म किसको कहते हैं ?

३४४ जिसके फलसे जीव संसारमें रुके ।

३४५ क्षेत्रविपाकी कर्म किसको कहते हैं ?

३४५ जिसके फलसे विग्रहगतिमें जीवका आकार पहलासा बना रहे।

३४६ विग्रहगति किसको कहते हैं ?

३४६ एक शरीरको छोडकर दूसरा शरीर ग्रहण करनेके लिये जीवके जानेको विग्रहगति कहते हैं।

३४७ घातिया कर्म कितने और कौन कौनसे हैं?

३४७ सैंतालीस—ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ९, मोहनीय २८, और अंतराय ५=४७।

३४८ अघातिया कर्म कितने और कौन कौनसे हैं ?

३४८ एकसो एक—वेदनीय २, आयु ४, नाम ९३, और गोत्र २=१०१

३४९ सर्वघातिया प्रकृति कितनी और कौन कौन सी हैं ?

३४९ इकीस हैं—ज्ञानावरणकी १ (केवलज्ञानावरण), दर्शनावरणकी ६ (केवलदर्शनावरण एक

और निद्रा पाँच), मोहनीयकी १४ (अनतानुबधी ४, अप्रत्याख्यानावरण ४, प्रत्याख्यानावरण ४, मिथ्यात्व १ और सम्यग्मिथ्यात्व १) ।

३५० देशघाति प्रकृति कितनी और कौन कौन सी हैं ?

३५० छब्बीस हैं—ज्ञानावरणकी ४ (मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण और मन पर्ययज्ञानावरण) दर्शनावरणकी ३ (चक्षुर्दर्शनावरण, अचक्षुर्दर्शनावरण और अवधिदर्शनावरण), मोहनीयकी १४ (सज्वलन ४, नो कषाय ९, सम्यक्त्व १), अन्तरायकी ५ ।

३५१ क्षेत्रविपाकी प्रकृति कितनी और कौन कौन सी हैं ?

३५१ चार हैं—नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी और देवगत्यानुपूर्वी ।

३५२ भवविपाकी प्रकृति कितनी और कौन कौन सी हैं ?

५२ चार हैं—नरकायु, तिर्यंचायु, मनुष्यायु और देवायु।

३५३ जीवविपाकी प्रकृति कितनी और कौन कौन सी हैं ?

३५३ अठहत्तर हैं—घातियाकी ४७, गोत्रकी २, वेदनीयकी २, और नामकर्मकी २७ (तीर्थंकर प्रकृति, उच्छ्वास, वादर, सूक्ष्म, पर्याप्ति, अपर्याप्ति, सुस्वर, दु-स्वर, आदेय, अनादेय, यश कीर्त्ति, अयश कीर्त्ति, त्रस, स्थावर, प्रशस्तविहायोगति, अप्रशस्तविहायोगति, सुभग, दुर्भग, गति ४, जाति ५) सब मिलकर ७८।

३५४ पुद्गलविपाकी प्रकृति कितनी और कौन कौन सी हैं ?

३५४ वासठ हैं—(सर्वप्रकृति १४८ मेंसे क्षेत्र-विपाकी ४, भवविपाकी ४, जीवविपाकी ७८ ऐसे सब मिलाकर ८६ प्रकृति घटानेसे शेष रही ६२ प्रकृति पुद्गलविपाकी हैं)।

३५५ पापप्रकृति कितनी और कौन २सी हैं?

३५५ सौ हैं—घातिया ४७—असातावेदनीय १, नीचगोत्र १, नरकायु १ और नामकर्मकी ५० (नरकगति १, नरकगत्यानुपूर्वी १, तिर्यग्गति १, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी १, जातिमेंसे आदिकी ४, संस्थान अतके ५, संहनन अंतके ५, स्पर्शादिक २०, उपघात १, अप्रशस्तविहायोगति १, स्थावर १, सूक्ष्म १, अपर्याप्ति १, अनादेय १, अयश कीर्ति १, अशुभ १, दुर्भग १, दुःस्वर १, अस्थिर १, साधारण १)।

३५६ पुण्यप्रकृति कितनी और कौन २सी है?

३५६ अडसठ हैं—कर्मकी समस्त प्रकृति १४८ जिनमेंसे पापकी १०० प्रकृति घटानेसे शेष रहीं ४८ और नामकर्मकी स्पर्शादि २० प्रकृति पुण्य और पाप दोनोंमें गिनी जाती हैं, क्योंकि—बीसों ही स्पर्शादिक किसीको इष्ट किसीको अनिष्ट होते

हैं। इसलिये ४८ में स्पर्शादिक २० मिलानेसे ६८ पुण्य प्रकृति होती हैं।

३५७ स्थितिबंध किसको कहते हैं ?

३५७ कर्मोंमें आत्माके साथ रहनेकी मियादके पडनेको स्थितिबंध कहते हैं।

३५८ आठों कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति कितनी कितनी है ?

३५८ ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, अंतराय इन चारों कर्मकी उत्कृष्ट स्थिति तीस तीस कोडाकोडी सागर है। मोहनीय कर्मकी सत्तर कोडाकोडी सागर है। नामकर्म और गोत्रकर्मकी बीस कोडाकोडी सागर है और आयुकर्मकी तेतीस सागरकी है।

३५९ आठों कर्मोंकी जघन्य स्थिति कितनी कितनी है ?

३५९ वेदनीयकी बारह मुहूर्त्त, नाम तथा गोत्रकी आठ आठ मुहूर्त्त और शेषके समस्त कर्मोंकी अंतर्मुहूर्त्त जघन्य स्थिति है।

३६० कोड़ाकोड़ी किसको कहते हैं ?

३६० एक करोड़को एक करोड़से गुणा करनेपर जो लब्ध हो, उसको एक कोड़ाकोड़ी कहते हैं।

३६१ सागर किसको कहते हैं ?

३६१ दश कोड़ाकोड़ी अद्धापल्योंका एक सागर होता है।

३६२ अद्धापल्य किसको कहते हैं ?

३६२ दो हजार कोश गहरे और दो हजार कोश चौड़े गोल गड्ढेमें कैंचीसे जिसका दूसरा भाग न हो सके, ऐसे मेंढेके बालोंको भरना। जितने बाल उसमें समावें, उनमेंसे एक एक बालको सौ सौ वर्ष बाद निकालना। जितने वर्षोंमें वे सब बाल निकल जावें, उतने वर्षोंके जितने समय हों, उसको व्यवहारपल्य कहते हैं। व्यवहारपल्यसे असख्यात गुणा उद्धारपल्य होता है। उद्धारपल्यसे असंख्यात गुणा अद्धापल्य होता है।

३६२ मुहूर्त किसको कहते हैं ?

३६३ अडतालीस मिनटका एक मुहूर्त्त होता है।

३६४ अन्तर्मुहूर्त किसको कहते हैं ?

३६४ आवलीसे ऊपर और मुहूर्तसे नीचेके कालको अन्तर्मुहूर्त्त कहते हैं।

३६५ आवली किसको कहते हैं ?

३६५ एक श्वासमें असंख्यात आवली होती हैं।

३६६ श्वासोच्छ्वास-काल किसको कहते हैं ?

३६६ नीरोग पुरुषकी नाडीके एक वार चलनेको श्वासोच्छ्वास काल कहते हैं।

३६७ एक मुहूर्त्तमें कितने श्वासोच्छ्वास होते हैं ?

३६७ तीन हजार सातसौ तिहत्तर (३७७३) होते हैं।

३६८ अनुभागबंध किसको कहते हैं ?

३६८ फल देनेकी शक्तिकी हीनाधिकताको अनुभागबंध कहते हैं।

३६९ प्रदेशबंध किसको कहते हैं ?
३६९ बँधनेवाले कर्मोंकी संख्याके निर्णयको प्रदेशबंध कहते हैं।
३७० उदय किसको कहते हैं ?
३७० स्थितिको पूरी करके कर्मके फल देनेको उदय कहते हैं।
३७१ उदीरणा किसको कहते हैं ?
३७१ स्थिति बिना पूरी किये ही कर्मके फल देनेको उदीरणा कहते हैं।
३७२ उपशम किसको कहते हैं ?
३७२ द्रव्य क्षेत्र काल भावके निमित्तसे कर्मकी शक्तिकी अनुद्भूतिको उपशम कहते हैं।
३७३ उपशमके कितने भेद हैं ?
३७३ दो हैं—एक अंतःकरणरूप उपशम, दूसरा सदवस्थारूप उपशम।
३७४ अन्तःकरणरूप उपशम किसको कहते हैं ?

३७८ एक समयमें कर्मके जितने परमाणु उदयमें आवें, उन सबके समूहको निषेक है ।

३७९ स्पर्द्धक किसको कहते हैं ?

३७९ वर्गणाओंके समूहको स्पर्द्धक कहते हैं ।

३८० वर्गणा किसको कहते हैं ?

३८० वर्गोंके समूहको वर्गणा कहते हैं ।

३८१ वर्ग किसको कहते हैं ?

३८१ समान अविभागप्रतिच्छेदोंके धारक प्रत्येक कर्मपरमाणुको वर्ग कहते हैं ।

३८२ अविभागप्रतिच्छेद किसको कहते हैं ?

३८२ शक्तिके अविभागी अंशको अविभागप्रतिच्छेद कहते हैं ।

३८३ इस प्रकरणमें 'शक्ति' शब्दसे कौनसी शक्ति इष्ट है ?

३८३ यहाँ शक्ति शब्दसे कर्मोंकी अनुभागरूप अर्थात् फलदेनेकी शक्ति इष्ट है ।

३८४ उदयाभावी क्षय किसको कहते हैं ?

३८४ बिना फल दिये आत्मासे कर्मके सम्बध छूटनेको उदयाभावी क्षय कहते हैं।

३८५ उत्कर्षण किसको कहते हैं ?

३८५ कर्मोंकी स्थितिके बढ जानेको उत्कर्षण कहते हैं।

३८६ अपकर्षण किसको कहते हैं ?

३८६ कर्मोंकी स्थितिके घटनेको अपकर्षण कहते हैं।

३८७ संक्रमण किसको कहते हैं ?

३८७ किसी कर्मके सजातीय एक भेदसे दूसरे भेदरूप हो जानेको संक्रमण कहते हैं।

३८८ समयप्रबद्ध किसको कहते हैं ?

३८८ एक समयमें जितने कर्मपरमाणु और नोकर्म परमाणु बँधे, उन सबको समयप्रबद्ध कहते हैं।

३८९ गुणहानि किसको कहते हैं ?

३८९ गुणाकाररूप हीन हीन द्रव्य जिसमें पाये जाँय, उसको गुणहानि कहते हैं। जैसे–किसी जीवने एक समयसें ६३०० तेरसठसौ परमाणुओंके समूहरूप समयप्रबद्धका बंध किया और उसमें ४८ समयकी स्थिति पडी, उसमें गुणहानियोंके समूह रूप नाना गुणहानि ६ उसमेंम प्रथम गुणहानिके परमाणु ३२०० दूसरी गुणहानिके १६०० तीसरी गुणहानिके ८०० चौथीके ४०० पाँचवींके २०० छट्ठीके १०० हैं। यहाँ उत्तरोत्तर गुणहानियोंमें गुणाकाररूप हीन हीन परमाणु (द्रव्य) पाये जाते हैं, इसलिये इसको गुणहानि कहते हैं

३९० गुणहानि आयाम किसको कहते हैं ?

३९० एक गुणहानिके समयके समूहको गुणहानि आयाम कहते हैं। जैसे–ऊपरके दृष्टांतमें ४८ समयकी स्थितिमें ६ गुणहानि थीं, तो ४८ में ६ का भाग देनेसे प्रत्येक गुणहानिका परिमाण ८ आया। यही गुणहानि आयाम कहलाता है।

ता है और ५१२ मेंसे एक एक चय
नीस २ घटानेसे दूसरे समयके द्रव्यका
४८०, तीसरेका ४४८, चौथेका ४१६,
३८४, छट्ठेका ३५२, सातवेंका ३२०
ठवेंका २८८ निकलता है। इसी प्रकार
द्रक गुणहानियोंमें भी प्रथमादि समयोंके
परिमाण निकाल लेना।

निषेकहार किसको कहते हैं?

गुणहानिआयामसे दूने परिमाणको निषेक-
ते हैं। ८ से दूने

२९८ निषेकहारमें एक अधिक गुणहानि आयाम का प्रमाण जोड़कर आधा करनेसे जो लब्ध आवे, उसको गुणहानिआयामसे गुणा करे। इस प्रकार गुणा करनेसे जो गुणनफल होय, उसका भाग विवक्षित गुणहानिके द्रव्यमें देनेसे विवक्षित गुण हानिके चयका परिमाण निकलता है। जसे— निषेकहार १६ में एक अधिक गुणहानिआयाम ९ जोड़नेसे २५ हुए। पचीसके आधे १२॥ को गुणहानिआयाम ८ से गुणाकार करनेसे १०० होते हैं। इस १०० का भाग विवक्षित प्रथम गुणहानिके द्रव्य ३२०० में देनेसे प्रथम गुणहानिसंबंधी चय ३२ आया। इसही प्रकार द्वितीय गुणहानिके चयका परिमाण १६, तृतीयका ८ चतुर्थका ४, पंचमका २ और अन्तिमका १ जानना

२९९ अनुभागकी रचनाका क्रम क्या है?

२९९ द्रव्यकी अपेक्षासे जो रचना ऊपर बता

गई है, उसमें प्रत्येक गुणहानिके प्रथमादि समय सम्बधी द्रव्यको वर्गणा कहते हैं। और उन वर्गणाओंमें जो परमाणु हैं, उनको वर्ग कहते हैं। प्रथम गुणहानिकी प्रथम वर्गणामें जो ५१२ वर्ग हैं, उनमें अनुभागशक्तिके अविभागप्रतिच्छेद समान हैं और वे द्वितीयादि वर्गणाओंके वर्गोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा सबसे न्यून अर्थात् जघन्य हैं। द्वितीयादि वर्गणाके वर्गोंमें एक एक अविभाग प्रतिच्छेदकी अधिकताके क्रमसे जिस वर्गणापर्यन्त एक एक अविभागप्रतिच्छेद बढे, वहाँतकको वर्गणाओंके समूहका नाम एक स्पर्द्धक है, और जिस वर्गणाके वर्गोंमें युगपत् अनेक अविभागप्रतिच्छेदोंकी वृद्धि होकर प्रथम वर्गणाके वर्गोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी संख्यासे दूनी संख्या हो जाय, वहाँसे दूसरे स्पर्द्धकका प्रारम्भ समझना। इस ही प्रकार जिन जिन वर्गणाओंके वर्गोंमें प्रथम वर्गणाके वर्गोंके

अविभागप्रतिच्छेदोंकी संख्यासे तिगुणे चौगुणे आदि अविभागप्रतिच्छेद होय, वहाँसे तीसरे चौथ आदि स्पर्द्धकोंका प्रारंभ समझना। इस प्रकार एक गुण हानिमें अनेक स्पर्द्धक होते हैं।

४०० आस्रव किसको कहते हैं ?

४०० बन्धके कारणको आस्रव कहते हैं।

४०१ आस्रवके कितने भेद हैं ?

४०१ चार हैं—द्रव्यबन्धका निमित्त कारण १, द्रव्यबन्धका उपादानकारण २, भावबन्धका निमित्त कारण ३, भावबन्धका उपादान कारण ४।

४०२ कारण किसको कहते हैं ?

४०२ कार्यकी उत्पादक सामग्रीको कारण कहते हैं

४०३ कारणके कितने भेद हैं ?

४०३ दो हैं—एक समर्थ कारण दूसरा असम कारण।

४०४ समर्थ कारण किसको कहते हैं ?

४०४ प्रतिबंधकका अभाव होनेपर सहकारी समस्त सामग्रियोंके सद्भावको समर्थ कारण कहते हैं। समर्थकारणके होनेपर अनन्तर समयमें कार्यकी उत्पत्ति नियमसे होती है।

४०५ असमर्थकारण किसको कहते हैं ?

४०५ भिन्न भिन्न प्रत्येक सामग्रीको असमर्थकारण कहते हैं। असमर्थकारण कार्यका नियामक नहीं है।

४०६ सहकारी सामग्रीके कितने भेद हैं ?

४०६ दो हैं।—एक निमित्तकारण दूसरा उपादानकारण।

४०७ निमित्तकारण किसको कहते हैं ?

४०७ जो पदार्थ स्वयं कार्यरूप न परिणमे, किन्तु कार्यकी उत्पत्तिमें सहायक हो, उनको निमित्त कारण कहते हैं। जैसे—घटकी उत्पत्तिमें कुंभकार, दंड, चक्र आदिक।

४०८ उपादानकारण किसको कहते हैं ?

४१७ प्रत्येक प्रकृतिके भिन्न भिन्न उपादानशक्तियुक्त अनन्त भेदरूप कार्माणस्कंधका आत्मासे संबंध होने को प्रकृतिबंध कहते हैं, और उन ही स्कंधोंमें फलदानशक्तिके तारतम्यको (न्यूनाधिकताको) अनुभागबंध कहते हैं।

४१८ समस्त प्रकृतियोंके बंधका कारण सामान्यतया योग है या उसमें कुछ विशेषता है?

४१८ जिस प्रकार भिन्न भिन्न उपादानशक्तियुक्त नाना प्रकारके भोजनोंको मनुष्य हस्तद्वारा इच्छाविशेषपूर्वक ग्रहण करता है, और विशेष इच्छाके अभावमें उदरपूरण करनेके लिये भोजनसामान्यका ग्रहण करता है, उस ही प्रकार यह जीव विशेष कषायके अभावमें योगमात्रसे केवल सातावेदनीयरूप कर्मको ग्रहण करता है, परंतु वह योग यदि किसी कषायविशेषसे अनुरंजित हो तो अन्यान्य प्रकृतियोंका भी बंध करता है।

४१९ प्रकृतिबंधके कारणत्वकी अपेक्षासे आस्रवके कितने भेद हैं ?

४१९ पाँच हैं—मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग।

४२० मिथ्यात्व किसको कहते हैं ?

४२० मिथ्यात्व प्रकृतिके उदयसे अदेवमें देवबुद्धि, अतत्त्वमें तत्त्वबुद्धि, अधर्ममें धर्मबुद्धि, इत्यादि विपरीताभिनिवेशरूप जीवके परिणामको मिथ्यात्व कहते हैं।

४२१ मिथ्यात्वके कितने भेद हैं ?

४२१ पाँच हैं—ऐकान्तिक मिथ्यात्व, विपरीतमिथ्यात्व, सांशयिक मिथ्यात्व, आज्ञानिक मिथ्यात्व और वैनयिक मिथ्यात्व।

४२२ ऐकान्तिकमिथ्यात्व किसको कहते हैं ?

४२२ धर्म धर्मीके यह ऐसा ही है अन्यथा नहीं, इत्यादि अत्यन्त अभिसन्निवेशको (अभिप्रायको) ऐकान्तिकमिथ्यात्व कहते हैं। जैसे–बौद्धमतानुयायी पदार्थको सर्वथा क्षणिक मानते हैं।

४२३ विपरीतमिथ्यात्व किसको कहते हैं ?

४२३ समय निर्ग्रंथ हैं, कवली मांसाहारी हैं, इत्यादि रुचिको विपरीतमिथ्यात्व कहते हैं।

४२४ सांशयिकमिथ्यात्व किसको कहते हैं ?

४२४ धर्म अहिंसालक्षण है या नहीं, इत्यादि मनिर्द्वैविध्यको सांशयिकमिथ्यात्व कहते हैं।

४२५ आज्ञानिकमिथ्यात्व किसको कहते हैं ?

४२५ जहाँ हिताहित विवेकका कुछ भी सद्भाव नहीं हो, उसको आज्ञानिकमिथ्यात्व कहते हैं। जैसे—पशुवधको धर्म समझना।

४२६ वैनयिकमिथ्यात्व किसको कहते हैं ?

४२६ समस्त देव तथा समस्त मतोंमें समदर्शीपनेको वैनयिकमिथ्यात्व कहते हैं।

४२७ अविरति किसको कहते हैं ?

४२७ हिंसादिक पापोंमें तथा इन्द्रिय और मनके विषयोंमें प्रवृत्ति होनेको अविरति कहते हैं।

४२८ अविरतिके कितने भेद हैं ?

४२८ तीन हैं—अनन्तानुबंधिकषायोदयजनित, अप्रत्याख्यानावरणकषायोदयजनित और प्रत्याख्यानावरणकषायोदयजनित ।

४२९ प्रमाद किसको कहते हैं ?

४२९ संज्वलन और नोकषायके तीव्र उदयसे निरतिचार चारित्र पालनेमें अनुत्साहको तथा स्वरूपकी असावधानताको प्रमाद कहते हैं ।

४३० प्रमादके कितने भेद हैं ?

४३० पन्द्रह भेद हैं—विकथा ४ (स्त्रीकथा, राष्ट्रकथा, भोजनकथा, राजकथा) कषाय ४ (संज्वलनके तीव्रोदयजनित क्रोध, मान, माया, लोभ) इन्द्रियोंके विषय ५, निद्रा एक और स्नेह एक ।

४३१ कषाय किसको कहते हैं ?

४३१ संज्वलन और नोकषायके मंद उदयमें दुर्भूत आत्माके परिणामविशेषको कषाय

४३२ योग किसको कहते हैं ?

४३२ मनोवर्गणा अथवा कायवर्गणा (आहारव र्गणा तथा कार्माणवर्गणा) और वचनवर्गणाके अव लम्बनसे कर्म नोकर्मको ग्रहण करनेकी शक्तिवि शेषको योग कहते हैं।

४३३ योगके कितने भेद हैं ?

४३३ पन्द्रह भेद हैं—मनोयोग ४ (सत्यमनो योग, असत्यमनोयोग, उभयमनोयोग और अनुभयम- नोयोग) काययोग ७ (औदारिक, औदारिकमिश्र वैक्रियक, वैक्रियकमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र और कार्माण), वचनयोग ४ (सत्यवचनयोग, असत्य वचनयोग, उभयवचनयोग और अनुभयवचनयोग)।

४३४ मिथ्यात्वकी प्रधानतामे किन किन प्रकृतियोंका बंध होता है ?

४३४ सोलह प्रकृतियोंका बंध होता है—मिथ्यात्व हुंडकसंस्थान, नपुंसकवेद, नरकगति, नरकगत्यानु

पूर्वी, नरकायु, असप्राप्तासृपाटिकासहनन, जाति ४ (एकेंद्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिंद्रिय), स्थावर, आताप, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण ।

४३५ अनंतानुबंधिकषायोदयजनित अविरतिमें किन किन प्रकृतियोंका बंध होता है?

४३५ पचीस प्रकृतियोंका बंध होता है—अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, स्त्यानगृद्धि, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय, अप्रशस्त-विहायोगति, स्त्रीवेद, नीचगोत्र, तिर्यग्गति, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, तिर्यगायु, उद्योत, संस्थान ४ (न्यग्रोध, स्वाति, कुब्जक, वामन) संहनन ४ (वज्रनाराच, नाराच, अर्धनाराच, और कीलित) ।

४३६ अप्रत्याख्यानावरणकषायोदयजनित अविरतिसे किन किन प्रकृतियोंका बंध होता है?

४३६ दश प्रकृतियोंका—अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ, मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी,

मनुष्यायु, औदारिकशरीर, औदारिकांगोपांग और वज्रऋषभनाराचसंहनन ।

४३७ प्रत्याख्यानावरणकषायोदयजनित अविरतिसे किन किन प्रकृतियोंका बंध होता है ?

४३७ चार प्रकृतियोंका—अर्थात्—प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया और लोभका ।

४३८ प्रमादसे कितनी प्रकृतियोंका बंध होता है ?

४३८ छह प्रकृतियोंका अर्थात् अस्थिर, अशुभ, असातावेदनीय, अयश कीर्ति, अरति और शोकका ।

४३९ कषायके उदयसे कितनी प्रकृतियोंका बंध होता है ?

४३९ अट्ठावन प्रकृतियोंका—अर्थात्—देवायु १ निद्रा १ प्रचला १ तीर्थंकर १ निर्माण १ प्रशस्तविहायोगति १ पंचेंद्रियजाति १ तैजसशरीर १ कार्माण-शरीर १ आहारक शरीर १ आहारकांगोपांग १ स

मचतुरस्रसस्थान १ वैक्रियकशरीर १ वैक्रियका- गोपांग १ देवगति १ देवगत्यानुपूर्वी १ रूप १ रस १ गंध १ स्पर्श १ अगुरुलघु १ उपघात १ परघात १ उच्छ्वास १ त्रस १ बादर १ पर्याप्त १ प्रत्येक १ स्थिर १ शुभ १ सुभग १ सुस्वर १ आदेय १ हास्य १ रति १ जुगुप्सा १ भय १ पुरुषवेद १ सज्वलन १ क्रोध १ मान १ माया १ लोभ १ मतिज्ञानावरण १ श्रुतज्ञानावरण १ अवधिज्ञानावरण १ मन पर्ययज्ञाना- वरण १ केवलज्ञानावरण १ चक्षुर्दर्शनावरण १ अचक्षुर्दर्शनावरण १ अवधिदर्शनावरण १ केवलदर्श नावरण १ दानान्तराय १ भोगान्तराय १ उपभो- गान्तराय १ वीर्यान्तराय १ लाभान्तराय १ यश स्कीर्ति १ और उच्चगोत्र १ इन ५८ प्रकृतियोंका बंध होता है।

४४० योगके निमित्तसे किस प्रकृतिका बंध होता है ?

४४० एक सातावेदनीयका बध होता है ।

४४१ कर्मप्रकृति सब १४८ हैं और कारण केवल १२० के लिखे सो २८ प्रकृतियोंका क्या हुआ ?

४४, स्पर्शादि २० की जगह ४ का ग्रहण किया गया है, इसकारण १६ तो ये घटीं और पाँचों शरीरोंके पाँचों बधन तथा पाँचों सघातका ग्रहण नहीं किया गया, इस कारण दश ये घटीं, और सम्यग्मिथ्यात्व तथा सम्यक्प्रकृतिमिथ्यात्व इन दो प्रकृतियोंका बध नहीं होता है । क्योंकि सम्यग्दृष्टि जीव पूर्वबद्ध मिथ्यात्व प्रकृतिके तीन खड करता है, तब इन दो प्रकृतियोंका प्रादुर्भाव होता है । इसकारण दो प्रकृतियाँ ये घट गईं ।

४४२ द्रव्यास्रवके कितने भेद हैं ?

४४२ दो हैं—एक साम्परायिक दूसरा ईर्यापथ ।

४४३ साम्परायिकआस्रव किसको कहते हैं ?

३ जो कर्म परमाणु जीवके कषायभावोंके नि

जिससे आत्मामें कुछ कालके लिये स्थितिको प्राप्त हों, उनके आस्रवको साम्परायिकआस्रव कहते हैं।

४४४ ईर्यापथआस्रव किसको कहते हैं ?

४४४ जिन कर्मपरमाणुओंका बंध, उदय और निर्जरा एक ही समयमें हो, उनके आस्रवको ईर्यापथआस्रव कहते हैं।

४४५ इन दोनों प्रकारके आस्रवोंके स्वामी कौन कौन हैं ?

४४५ साम्परायिकआस्रवका स्वामी कषायसहित और ईर्यापथका स्वामी कषायरहित आत्मा होता है।

४४६ पुण्यास्रव और पापास्रवका कारण क्या है ?

४४६ शुभ योगसे पुण्यास्रव और अशुभ योगसे पापास्रव होता है।

४४७ शुभयोग और अशुभयोग किसको कहते हैं ?

४४७ शुभ परिणामसे उत्पन्न योगको शुभयोग और अशुभ परिणामसे उत्पन्न योगको अशुभयोग कहते हैं।

४४८ जिस समय जीवके शुभयोग होता है, उस समय पापप्रकृतियोंका आस्रव होता है ? या नहीं ?

४४८ होता है।

४४९ यदि होता है, तो शुभयोग पापास्रव का भी कारण ठहरा ?

४४९ नहीं ठहरा। क्योंकि जिस समय जीवमें शुभयोग होता है, उस समय पुण्यप्रकृतियोंमें स्थिति अनुभाग अधिक पडता है, और पापप्रकृतियोंमें कम पडता है, और इस ही प्रकार जब अशुभयोग होता है, तब पापप्रकृतियोंमें स्थिति अनुभाग अधिक पडता है, और पुण्यप्रकृतियोंमें कम। दशाध्याय तत्त्वार्थसूत्रके छठे अध्यायमें ज्ञानावरणादि प्रकृतियोंके आस्रवके कारण जो तत्प्रदोषनिह्नवादिक कहे गये हैं, उसका अभिप्राय

है कि उन उन भावोंसे उन उन प्रकृतियोंमें स्थिति अनुभाग अधिक अधिक पडते हैं। अन्य जो ज्ञानावरणादिक पापप्रकृतियोंका आस्रव दशवें गुणस्थानतक सिद्धान्तशास्त्रमें कहा है, उससे विरोध आवेगा अथवा वहां शुभयोगके अभावका प्रसंग आवेगा। क्योंकि शुभयोग दशवें गुणस्थानसे पहले पहले ही होता है।

इति तृतीयोऽध्याय समाप्त।

चतुर्थोऽध्यायः।

४५० जीवके असाधारण भाव कितने हैं?

४५० पांच हैं—औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक और परिणामिक।

४५१ औपशमिक भाव किसको कहते हैं?

४५१ जो निमित्त कर्मके उपशमसे हो उसको औपशमिकभाव कहते हैं।

४५२ क्षायिकभाव किसको कहते हैं?

४५२ जो किसी कर्मके क्षयसे उत्पन्न हो उसको क्षायिकभाव कहते हैं।

४५३ क्षायोपशमिकभाव किसको कहते हैं ?

४५३ जो कर्मोंके क्षयोपशमसे हो, उसको क्षायोपशमिकभाव कहते हैं।

४५४ औदयिकभाव किसको कहते हैं ?

४५४ जो कर्मोंके उदयसे हो, उसको औदयिकभाव कहते हैं।

४५५ पारिणामिकभाव किसको कहते हैं ?

४५५ जा उपशम, क्षय, क्षयोपशम या उदयकी अपेक्षा न रखता हुआ जीवका स्वभावमात्र हो उसको पारिणामिकभाव कहते हैं।

४५६ औपशमिकभावके कितने भेद हैं ?

४५६ दो हैं—एक सम्यक्त्वभाव, दूसरा चारित्र भाव।

४५७ क्षायिकभावके कितने भेद हैं ?

४५७ नौ हैं—क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिकचारित्र, क्षायिकदर्शन, क्षायिकज्ञान, क्षायिकदान, क्षायिकलाभ, क्षायिकभोग, क्षायिकउपभोग, क्षायिकवीर्य ।

४५८ क्षायोपशमिकभावके कितने भेद हैं ?

४५८ अठारह—सम्यक्त्व, चारित्र, चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन, अवधिदर्शन, देशसयम, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्ययज्ञान, कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, कुअवधिज्ञान, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य।

४५९ औदयिकभाव कितने हैं ?

४५० इक्कीस हैं—गति ४ कषाय ४ लिंग ३ मिथ्यादर्शन १ अज्ञान १ असयम १ असिद्धत्व १ लेश्या ६ (पीत, पद्म, शुक्ल, कृष्ण, नील, कापोत) ।

४६० पारिणामिकभाव कितने हैं ?

४६० तीन हैं—जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व ।

४६१ लेश्या किसको कहते हैं ?

४६१ कषायके उदयकरके अनुरजित योगोंकी

४७२ इन्द्रिय किसको कहते हैं ?

४७२ आत्माके लिङ्गको (चिह्नको) इन्द्रिय कहते हैं।

४७३ इन्द्रियके कितने भेद हैं ?

४७० दो हैं–द्रव्येन्द्रिय और भावेन्द्रिय ।

४७४ द्रव्येन्द्रिय किसको कहते हैं ?

४७४ निर्वृत्ति और उपकरणको द्रव्येन्द्रिय कहते हैं।

४७५ निर्वृत्ति किसको कहते हैं ?

४७५ प्रदेशोंकी रचनाविशेषको निवृत्ति कहते हैं।

४७६ निर्वृत्तिके कितने भेद हैं ?

४७६ दो हैं -बाह्य और आभ्यन्तर।

४७७ बाह्यनिर्वृत्ति किसको कहते हैं ?

४७७ इन्द्रियोंके आकाररूप पुद्गलकी रचनाविशेषको बाह्यनिर्वृत्ति कहते हैं।

४७८ आभ्यन्तरनिर्वृत्ति किसको कहते हैं ?

४७८ आत्माके विशुद्धप्रदेशोंकी इन्द्रियाकार रचनाविशेषको आभ्यन्तरनिर्वृत्ति कहते हैं।

४७९ उपकरण किसको कहते है ?

४७९ जो निर्वृत्तिका उपकार (रक्षा) करे, उसको उपकरण कहते हैं।

४८० उपकरणके कितने भेद हैं ?

४८० दो हैं-आभ्यन्तर और बाह्य।

४८१ आभ्यन्तरउपकरण किसको कहते हैं ?

४८१ नेत्रइन्द्रियमें कृष्ण शुक्ल मडलकी तरह सब इद्रियोंमें जो निर्वृत्तिका उपकार करे, उसको आभ्यन्तरउपकरण कहते हैं।

४८२ बाह्योपकरण किसको कहते हैं ?

४८२ नेत्रेन्द्रियमें पलक वगैरहकी तरह जो निर्वृत्तिका उपकार करे, उसको बाह्योपकरण कहते हैं।

४८३ भावेन्द्रिय किसको कहते हैं ?

४८३ लब्धि और उपयोगको भावेन्द्रिय कहते हैं।

४८४ लब्धि किसको कहते हैं ?

४८४ ज्ञानावरण कर्मके क्षयोपशमको लब्धि कहते हैं।

४८५ उपयोग किसको कहते हैं ?
४८५ क्षयोपशमहेतुक चेतनाके परिणाम विशेषको उपयोग कहते हैं।
४८६ द्रव्येन्द्रियोंके कितने भेद हैं ?
४८६ पाँच हैं—स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र।
४८७ स्पर्शनेन्द्रिय किसको कहते हैं ?
४८७ जिसके द्वारा आठ प्रकारके स्पर्शका ज्ञान हो, उसको स्पर्शनेन्द्रिय कहते हैं।
४८८ रसनेन्द्रिय किसको कहते हैं ?
४८८ जिसके द्वारा पाँच प्रकारके रसका (स्वादका) ज्ञान हो, उसको रसनेन्द्रिय कहते हैं।
४८९ घ्राणेन्द्रिय किसको कहते हैं ?
४८९ जिसके द्वारा दो प्रकारकी गंधका (सुगंध दुर्गंधका) ज्ञान हो, उसको घ्राणेन्द्रिय कहते हैं।
४९० चक्षुरिन्द्रिय किसको कहते हैं ?

४९० जिसके द्वारा पाँच प्रकारके वर्णका (रंगका) ज्ञान हो, उसको चक्षुरिंद्रिय कहते हैं।

४९१ श्रोत्रेन्द्रिय किसको कहते हैं?

४९१ जिसके द्वारा सात प्रकारके स्वरोंका ज्ञान हो, उसको श्रोत्रेंद्रिय कहते हैं।

४९२ किन किन जीवोंके कौन कौन सी इन्द्रियाँ होती हैं?

४९२ पृथिवी, अप, तेज, वायु और वनस्पति इन जीवोंके एक स्पर्श इन्द्रिय ही होती है। कृमि आदि जीवोंके स्पर्शन और रसना दो इन्द्रियाँ होती हैं। पिपीलिका (चिंवटी) वगैरह जीवोंके स्पर्शन, रसना और घ्राण ये तीन इन्द्रियाँ होती हैं। भ्रमर मक्षिका वगैरहके श्रोत्रके विना चार इन्द्रियाँ होती हैं। घोड़े आदि पशु, मनुष्य, देव और नारकी जीवोंके पाँचों इन्द्रियाँ होती हैं।

४९३ काय किसको कहते हैं?

४९३ त्रस स्थावर नामकर्मके उदयसे आत्माके प्रदेशप्रचयको काय कहते हैं।

४९४ त्रस किसको कहते हैं?

४९४ त्रसनामा नामकर्मके उदयसे द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, और पचेन्द्रियोंमें जन्म लेनेवाले जीवोंको त्रस कहते हैं।

४९५ स्थावर किसको कहते हैं?

४९५ स्थावरनामा नामकर्मके उदयसे पृथिवी, अप, तेज, वायु और वनस्पतिमें जन्म लेनेवाले जीवोंको स्थावर कहते हैं।

४९६ बादर किसको कहते हैं?

४९६ पृथिवी आदिकसे जो रुक जाय वा दूसरोंको रोके, उसको बादर कहते हैं।

४९७ सूक्ष्म किसको कहते हैं?

४९७ जो पृथिवी आदिकसे स्वय न रुके और न दूसरे पदार्थोंको रोके, उसको सूक्ष्म कहते हैं।

४९८ वनस्पतिके कितने भेद हैं ?
४९८ दो हैं--प्रत्येक और साधारण ।
४९९ प्रत्येकवनस्पति किसको कहते ह ?
४९९ एक शरीरका जो एक ही स्वामी हो, उसको प्रत्येकवनस्पति कहते है ।
५०० साधारणवनस्पति किसको कहते हैं ?
५०० जिन जीवोंके आहार, आयु, श्वासोच्छ्वास, और काय ये साधारण (समान अथवा एक) हों, उनको साधारण कहते हैं । जैसे -कदमूलादिक ।
५०१ प्रत्येकवनस्पतिके कितने भेद है ?
५०१ दो है--सप्रतिष्ठित प्रत्येक और अप्रतिष्ठित प्रत्येक ।
५०२ सप्रतिष्ठितप्रत्येक किसको कहते हैं ?
५०२ जिस प्रत्येकवनस्पतिके आश्रय अनेक साधारणवनस्पति शरीर हों, उसको सप्रतिष्ठित प्रत्येक कहते हैं ।

करनेकी जीवकी शक्तिविशेषको भावयोग कहते हैं, इस ही भावयोगके निमित्तसे आत्मप्रदेशोंके परिस्पंदनको (चचल होनेको) द्रव्ययोग कहते हैं।

५१० योगके कितने भेद हैं ?

५१० पद्रह हैं—मनोयोग ४, वचनयोग ४, और काययोग ७।

५११ वेद किसको कहते हैं ?

५११ नोकषायके उदयसे उत्पन्न हुई जीवके मैथुन करनेकी अभिलाषाको भाववेद कहते हैं, और नामकर्मके उदयसे आविर्भूत जीवके चिह्न विशेषको द्रव्यवेद कहते हैं।

५१२ वेदके कितने भेद हैं ?

५१२ तीन हैं—स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुसकवेद।

५१३ कषाय किसको कहते हैं ?

५१३ जो आत्माके सम्यक्त्व, देशचारित्र, सकलचारित्र और यथाख्यातचारित्ररूप परिणामोंको घाते, उसको कषाय कहते हैं।

५१४ कषायके कितने भेद हैं ?
५१४ सोलह भेद हैं–अनन्तानुबन्धी ४, अप्रत्याख्यानावरणीय ४, प्रत्याख्यानावरणीय ४, और सज्वलन ४ ।
५१५ ज्ञानमार्गणाके कितने भेद हैं ?
५१५ मति, श्रुत, अवधि, मन पर्यय, केवल तथा कुमति, कुश्रुत, कुअवधि ।
५१६ सयम किसको कहते हैं ?
५१६ अहिंसादिक पाँच व्रत धारण करने, ईर्यापथ आदि पाँच समितियोंके पालने, क्रोधादि कषायोंके निग्रह करने, मनोयोगादिक तीनों योगोंको रोकने, स्पर्शन आदि पाँचों इन्द्रियके विजय करनेको सयम कहते हैं ।
५१७ सयममार्गणाके कितने भेद हैं ?
५१७ सात हैं–सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय, यथाख्यात, सयमासयम और असयम ।

५१८ दर्शनमार्गणाके कितने भेद हैं ?

५१८ चार हैं–चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन, अवधि-दर्शन, केवलदर्शन ।

५१९ लेश्यामार्गणाके कितने भेद हैं ?

५१९ छह भेद हैं–कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल ।

५२० भव्यमार्गणाके कितने भेद हैं ?

५२० दो हैं भव्य और अभव्य ।

५२१ सम्यक्त्व किसको कहते हैं ?

५२१ तत्त्वार्थश्रद्धानको सम्यक्त्व कहते हैं ।

५२२ सम्यक्त्वमार्गणाके कितने भेद हैं ?

५२२ छह भेद हैं–उपशमसम्यक्त्व, क्षयोपशम सम्यक्त्व, क्षायिकसम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सासादन और मिथ्यात्व ।

५२३ सञ्ज्ञी किसको कहते हैं ?

५२३ जिसमें सञ्ज्ञा हो उसको सञ्ज्ञी कहते हैं

५२४ सञ्ज्ञा किसको कहते हैं ?

५२४ द्रव्यमनके द्वारा शिक्षादि ग्रहण करनेको सञ्ज्ञा कहते हैं ।

५२५ सञ्ज्ञीमार्गणाके कितने भेद हैं ?

५२५ दो हैं–सञ्ज्ञी और असञ्ज्ञी ।

५२६ आहार किसको कहते है ?

५२६ औदारिक आदिक शरीर और पर्याप्तिके योग्य पुद्गलोंके ग्रहण करनेको आहार कहते हैं ।

५२७ आहारमार्गणाके कितने भेद हैं ?

५२७ दो हैं–आहारक और अनाहारक ।

५२८ अनाहारक जीव किस किस अवस्थामें होता है ?

५२८ विग्रह गति, और किसी किसी समुद्घातमें, अयोगकेवली अवस्थामें जीव अनाहारक होता है ।

५२९ विग्रहगति किसको कहते हैं ?

५२९ एक शरीरको छोडकर दूसरे शरीरके प्रति गमन करनेको विग्रहगति कहते हैं ।

५३० विग्रहगतिमें कौनसा योग होता है ?

५३० कार्माणयोग होता है।

५३१ विग्रहगतिके कितने भेद हैं ?

५३१ चार हैं–ऋजु गति, पाणिमुक्ता गति, लांगलिका गति, गोमूत्रिका गति।

५३२ इन विग्रहगतियोंमें कितना कितना काल लगता है ?

५३२ ऋजुगतिमें एक समय, पाणिमुक्ता अर्थात् एक मोडवाली गतिमें दो समय, लांगलिका गतिमें तीन समय, और गोमूत्रिका गतिमें चार समय लगते है।

५३३ इन गतियोंमें अनाहारक अवस्था कितने समयतक रहती है ?

५३३ ऋजुगतिवाला जीव अनाहारक नहीं होता, पाणिमुक्ता गतिमें एक समय, लांगलिकामें दो समय और गोमूत्रिकामें तीन समय अनाहारक रहता है।

५३४ मोक्षजानेवाले जीवके कौनसी गति होती है ?

—

५३४ ऋजु गति होती है और वह जीव अनाहारक ही होता है।

५३५ जन्म कितने प्रकारका होता है ?

५३५ तीन प्रकारका—उपपादजन्म, गर्भजन्म, और सम्मूर्च्छनजन्म।

५३६ उपपादजन्म किसको कहते हैं ?

५३६ जो जीव देवोंकी उपपादशय्या तथा नारकियोंके योनिस्थानम पहुँचते ही अतर्मुहूर्तमें युवावस्थाको प्राप्त हो जाँय, उस जन्मको उपपादजन्म कहते हैं।

५३७ गर्भजन्म किसे कहते हैं ?

५३७ माता पिताके शोणितशुक्रसे जिनका शरीर बने, उनके जन्मको गर्भजन्म कहते हैं।

५३८ सम्मूर्छनजन्म किसको कहते हैं ?

५३८ जो माता पिताकी अपेक्षाके विना इधर उधरके परमाणुओंको शरीररूप परिणमावे, उसके जन्मको सम्मूर्च्छन जन्म कहते हैं ।

५३९ किन किन जीवोंके कौन कौन सा जन्म होता है ?

५३९ देवनारकियोंके उपपाद जन्म ही होता है। जरायुज, अडज, पात, (जो योनिसे निकलते ही भागने दौडने लग जाते हैं और जिनके ऊपर जेर वगैरह नहीं होती है) जीवोंके गर्भजन्म ही होता है। और शेष जीवोंके सम्मूर्छनजन्म ही होता है।

५४० कौन कौन से जीवोंके कौन कौन सा लिंग होता है ?

५४० नारकी और सम्मूर्छन जीवोंके नपुंसक लिंग होता है, देवोंके पुल्लिंग और स्त्रीलिंग और शेष जीवोंके तीनों लिंग होते हैं।

५४१ जीवसमास किसको कहते हैं ?

५४१ जीवोंके रहनके ठिकानोंको जीवसमास कहते हैं।

५४२ जीवसमासके कितने भेद हैं ?

५४२अष्टानवें—तिर्यंचके ८५ मनुष्यके ९ नारकीके दो और देवोंके दो।

५४३ तिर्यंचके पचासी भेद कौन कौन से हैं?

५४३ सम्मूर्च्छनके उनहत्तर और गर्भजके सोलह।

५४४ सम्मूर्च्छनके उनहत्तर कौन कौन से हैं?

५४४ एकेंद्रियके ४२ विकलत्रयके ९ और पचेन्द्रियके १८।

५४५ एकेन्द्रियके वियालीस कौन कौन से हैं?

५४५ पृथिवी, अप, तेज, वायु, नित्यनिगोद, इतरनिगोद, इन छहोंके बादर और सूक्ष्मकी अपेक्षासे १२ तथा संप्रतिष्ठितप्रत्येक और अप्रतिष्ठितप्रत्येकको मिलानेसे १४ हुए। इन चौदहोंके पर्याप्तक, निर्वृत्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक इन तीनोंकी अपेक्षासे ४२ जीवसमास होते हैं।

५४६ विकलत्रयके ९ भेद कौन कौन से हैं?

५४६ द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रियके पर्या-

प्तक निर्वृत्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तककी अपेक्षासे ना भेद हुए ।

५४७ सम्मूर्च्छन पचेन्द्रियके अठारह भेद कौन कौन से हैं ?

५४७ जलचर, थलचर, नभचर, इन तीनोंके सैनी असैनीकी अपेक्षासे ६ भेद हुए और इन छहोंके पर्याप्तक निर्वृत्यपर्याप्तक, लब्ध्यपर्याप्तककी अपेक्षासे १८ जीवसमास होते हैं ।

५४८ गर्भज पचेन्द्रियके १६ भेद कौन कौन से हैं।

५४८ कर्मभूमिके १२ और भोगभूमिके ४ ।

५४९ कर्मभूमिके बारह भेद कौन कौन से हैं ?

५४९ जलचर, स्थलचर, नभचर इन तीनोंके सैनी असैनीके भेदसे छह भेद हुए और इनके पर्याप्त निर्वृत्यपर्याप्तककी अपेक्षा १२ भेद हुए ।

५५० भोगभूमिके चार भेद कौन कौन से हैं ?

५५० थलचर और नभचर इनके पर्याप्तक और

निर्वृत्यपर्याप्तककी अपेक्षा ४ भेद हुए । भोगभूमिमें असैनी तिर्यंच नहीं होते ।

५५१ मनुष्योंके नौ भेद कौन कौनसे हैं?

५५१ आर्यखंड म्लेच्छखंड भोगभूमि और कुभोगभूमि इन चारों गर्भजोंके पर्याप्तक निर्वृत्यपर्याप्तककी अपेक्षा ८ हुए। इनमें सम्मूर्छन मनुष्यका लब्ध्यपर्याप्तक भेद मिलानेसे ९ भेद होते हैं।

५५२ नारकियोंके दो भेद कौन कौन से हैं?

५५२ पर्याप्तक और निर्वृत्यपर्याप्तक ।

५५३ देवोंके दो भेद कौन कौन से हैं?

५५३ पर्याप्तक और निर्वृत्यपर्याप्तक ।

५५४ देवोंके विशेष भेद कौन कौनसे हैं?

५५४ चार हैं–भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक ।

५५५ भवनवासी देवोंके कितने भेद हैं?

५५५ दश हैं–असुरकुमार, नागकुमार, विद्यु-

स्तुमार, सुपर्णकुमार, अग्निकुमार, वातकुमार, स्तनितकुमार, उदधिकुमार, द्वीपकुमार, दिक्कुमार ।

५५६ व्यन्तरोंके कितने भेद हैं ?

५५६ आठ हैं—किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गधर्व, यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाच ।

५५७ ज्योतिष्क देवोंके कितने भेद हैं ?

५५७ पाँच भेद हैं—सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र और तारे ।

५५८ वैमानिक देवोंके कितने भेद हैं ?

५५८ दो हैं—कल्पोपपन्न और कल्पातीत ।

५५९ कल्पोपपन्न किनको कहते हैं ?

५५९ जिनमें इन्द्रादिकोंकी कल्पना हो उनको कल्पोपपन्न कहते हैं ।

५६० कल्पातीत किनको कहते हैं ?

५६० जिनमें इन्द्रादिककी कल्पना न हो उनको कल्पातीत कहते हैं ।

५६१ कल्पोपन्न देवोंके कितने भेद हैं ?
५६१ सोलह—सौधर्म, ऐशान, सानत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लांतव, कापिष्ट, शुक्र, महाशुक्र, सतार, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, और अच्युत ।
५६२ कल्पातीत देवोंके कितने भेद हैं ?
५६२ तेईस हैं—नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश, पाँच पचोत्तर (विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित और सर्वार्थसिद्धि) ।
५६३ नारकियोंके विशेष भेद कौन कौन से हैं ?
५६३ पृथिवियोंकी अपेक्षासे सात भेद हैं ।
५६४ सात पृथिवियोंके नाम क्या क्या हैं ?
५६४ रत्नप्रभा (घमा), शर्कराप्रभा (वंशा), वालुकाप्रभा (मेघा), पंकप्रभा (अंजना), धूमप्रभा (अरिष्टा), तम प्रभा (मघवी), महातम — प्रभा (माघवी) ।

५६५ सूक्ष्म एकेन्द्रियजीवोंके रहनेका स्थान कहाँ है ?

५६५ सर्वलोक ।

५६६ वादरएकेन्द्रिय जीव कहाँ रहते हैं ?

५६६ वादरएकेन्द्रिय जीव किसी आधारका निमित्त पाकर निवास करते हैं ।

५६७ त्रसजीव कहाँ रहते हैं ?

५६७ त्रसजीव त्रसनालीमें ही रहते हैं ।

५६८ विकलत्रय कहाँ रहते हैं ?

५६८ विकलत्रयजीव कर्मभूमि और अतके आधे द्वीप तथा अतके स्वयभरमण समुद्रमें ही रहते हैं ।

५६९ पचेन्द्रिय तिर्यंच कहाँ कहाँ रहते हैं ?

५६९ तिर्यक् लोकमें रहते हैं, परतु जलचर तिर्यंच लवणसमुद्र, कालोदधिसमुद्र और स्वयभूरमण समुद्रके सिवाय अन्य समुद्रोंमें नहीं हैं ।

५७० नारकीजीव कहाँ रहते हैं ?

५७० अधोलोकके सात पृथिवियोंमें (नरकोंमें) रहते हैं।

५७१ भवनवासी और व्यन्तर देव कहाँ रहते हैं ?

५७१ पहिली पृथिवीके खरभाग और पङ्कभागमें तथा तिर्यक् लोकमें।

५७२ जोतिष्क देव कहाँ रहते हैं ?

५७२ पृथिवीसे सातसौ नव्वै योजनकी उचाईसे लगाकर नौसौ योजनकी उचाई तक अर्थात् एकसौ दश योजन आकाशमें एक राजूमात्र तिर्यक्-लोकमें ज्योतिष्क देव निवास करते हैं।

५७३ वैमानिक देव कहाँ रहते हैं ?

५७३ ऊर्ध्वलोकमें।

५७४ मनुष्य कहाँ रहते हैं ?

५७४ नरलोकमें।

५७५ लोकके कितने भेद हैं ?

५७५ तीन हैं—ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक और अधोलोक।

५७६ अधोलोक किसको कहते हैं ?

५७६ मेरुके नीचे सात राजू अधोलोक है ।

५७७ ऊर्ध्वलोक किसको कहते हैं ?

५७७ मेरुके ऊपर लोकके अतपर्यंत ऊर्ध्वलोक है।

५७८ मध्यलोक किसको कहते हैं ?

५७८ एक लाख चालीस योजन मेरुकी ऊचाईके बराबर मध्यलोक है ।

५७९ मध्यलोकका विशेष स्वरूप क्या है ?

५७९ मध्यलोकके अत्यन्त बीचमें एकलाख योजन चौडा, गोल (थालीकी तरह) जबूद्वीप है। जबूद्वीपके बीचमें एकलाख योजन ऊचा सुमेरु पर्वत है । जिसका एक हजार योजन जमीनके भीतर मूल है । निन्याणवे हजार योजन पृथिवीके ऊपर है। और चालीस योजनकी चूलिका (चोटी) है

१ यहाँ एक योजन दो हजार कोशका जानना ।

जबूद्वीपके बीचमें पश्चिम पूर्वकी तरफ छेने छह कुलाचल पर्वत पडे हुए हैं। जिनसे जबूद्वीपके सात खड होगए हैं। इन सातों खडोंके नाम इस प्रकार हैं—भरत १, हैमवत २, हरि ३, विदेह ४, रम्यक ५, हैरण्यवत ६ और ऐरावत ७। विदेहक्षेत्रमें मेरुसे उत्तरकी तरफ उत्तरकुरु और दक्षिणकी तरफ देवकुरु हैं। जबूद्वीपके चारों तरफ खाईकी तरह वेढे हुए दो लाख योजन चौडा लवणसमुद्र है। लवणसमुद्रको चारों तरफसे वेढे हुए चार लाख योजन चौडा धातकी-खड द्वीप है। इस धातकीखड द्वीपमें दो मेरु पर्वत हैं और क्षेत्र कुलाचलादिकी सब रचना जबूद्वीपसे दूनी है। धातकीखडको चारों तरफ वेढे हुए आठ लाख योजन चौडा कालोदधि समुद्र है। और कालोदधिको वेढे हुए सोलह लाख योजन चौडा पुष्करद्वीप है। पुष्करद्वीपके बीचोंबीच

वन्यके आकार, चोडाई पृथिवीपर एक हजार बाईस योजन, बीचमें सातसौ तेईस योजन, ऊपर चार सौ चौबीस योजन, ऊचा सतरहसौ इक्कीस योजन, और जमीनके भीतर चारसौ सत्तावीस योजन जिसकी जड है ऐसा मानुषोत्तरनामा पर्वत पडा हुआ है, जिससे पुष्करद्वीपके दो खड हो गये हैं। पुष्कर द्वीपके पहिले अर्द्ध भागमें जबूद्वीपसे दूनी दूनी अर्थात् धातकीखड द्वीपके बराबर सब रचना है। जबूद्वीप धातकीखड और पुष्करार्द्ध द्वीप तथा लवणोदधि समुद्र और कालोदधि समुद्र इतने क्षेत्रको नरलोक कहते हैं। पुष्करद्वीपसे आगे परस्पर एक दूसरेको वेढे हुए दूने दूने विस्तारवाले मध्यलोकके अतपर्यन्त द्वीप और समुद्र हैं। पाँच मेरु सम्बधी पाँच भरत, पाँच ... देवकुरु और उत्तरकुरुको छोडकर पाँच ...स प्रकार सब मिलकर १५ कर्मभूमि हैं।

पाँच हैमवत और पाँच हैरण्यवत इन दश क्षेत्रोंमें जघन्य भोगभूमि है। पाँच हरि और पाँच रम्यक इन दश क्षेत्रोंमें मध्यम भोगभूमि है। और पाँच देवकुरु और पाँच उत्तरकुरु इन दश क्षेत्रोंमें उत्तम भोगभूमि है। जहाँपर असि, मषि, कृषि, सेवा, शिल्प और वाणिज्य इन षट्कर्मोंकी प्रवृत्ति हो, उसको कर्मभूमि कहते हैं। जहाँ इनकी प्रवृत्ति न हो उसको भोगभूमि कहते हैं। मनुष्यक्षेत्रसे बाहरके समस्त द्वीपोंमें जघन्य भोगभूमिकीसी रचना है। किंतु अंतिम स्वयंभूरमण द्वीपके उत्तरार्द्धमें तथा समस्त स्वयंभूरमण समुद्रमें और चारों कोनोंकी पृथिवियोंमें कर्मभूमिकीसी रचना है। लवणसमुद्र और कालोदधिसमुद्रमें ९६ अंतर्द्वीप हैं, जिनमें कुभोगभूमिकी रचना है। वहाँ मनुष्य ही रहते हैं। उनमें मनुष्योंकी आकृतियें नाना प्रकारकी कुत्सित हैं।

इति भूगोलाध्याय समाप्त ।

पञ्चमोऽध्याय ।

५८० ससारमें समस्त प्राणी सुखको चाहते हैं और सुखहीका उपाय करते है, परतु सुखको प्राप्त क्यों नहीं होते ?

५८० ससारी जीव असली सुखका स्वरूप और उसका उपाय न तो जानते हैं और न उसका साधन करते हैं, इसलिये सुखको भी प्राप्त नहीं होते।

५८१ असली सुखका क्या स्वरूप है ?

५८१ आल्हादस्वरूप जीवके अनुजीवी गुणको असली सुख कहते हैं । यही जीवका खास स्वभाव है। परतु ससारी जीवोंने भ्रमवश सातावेदनीय कर्मके उदयजनित उस असली सुखकी वैभाविक परिणतिरूप साता परिणामको ही सुख मान रक्खा है।

५८२ ससारी जीवको असली सुख क्यों नहीं मिलता है?

५८२ कर्मोंने उस सुखको घात रक्खा है, इस कारण असली सुख नहीं मिलता ।

५८३ ससारी जीवको असली सुख कब मिल सकता है ?

५८३ मोक्ष होनेपर ।

५८४ मोक्षका स्वरूप क्या है ?

५८४ आत्मासे समस्त कर्मोंके विप्रमोक्षको (अत्यन्त वियोगको) मोक्ष कहते हैं ।

५८५ उस मोक्षकी प्राप्तिका उपाय क्या है ?

५८५ सवर और निर्जरा ।

५८६ सवर किसको कहते हैं ?

५८६ आस्रवके निरोधको सवर कहते हैं । अर्थात् अनागत (नवीन) कर्मोंका आत्माके साथ सबध न होनेका नाम सवर है ।

५८७ निर्जरा किसको कहते हैं ?

५८७ आत्माका पूर्वमें बधे हुए कर्मोंसे सबध छूटनेको निर्जरा कहते हैं ।

५८८ संवर और निर्जरा होनेका उपाय क्या है ?

५८८ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र इन तीनों पूर्ण गुणोंकी एकता ही संवर और निर्जरा होनेका उपाय है ।

५८९ इन तीनों पूर्ण गुणोंकी एकता युगपत् होती है या क्रमसे ?

५८९ क्रमसे होती ।

५९० इन तीनों पूर्ण गुणोंकी एकता होनेका क्रम किस प्रकार है ?

५९० जैसे जैसे गुणस्थान बढते हैं, तैसे ही ये गुण भी बढते हुए अंतमें पूर्ण होते हैं ।

५९१ गुणस्थान किसको कहते हैं ?

५९१ मोह और योगके निमित्तसे सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्ररूप आत्माके गुणोंकी तारतम्यरूप अवस्थाविशेषको गुणस्थान कहते हैं ।

५९२ गुणस्थानके कितने भेद हैं ?

५९२ चोदह हैं—मिथ्यात्व १, सासादन २, मिश्र ३, अविरतसम्यग्दृष्टि ४, देशविरत ५, प्रमत्तविरत ६, अप्रमत्तविरत ७, अपूर्वकरण ८, अनिवृत्तिकरण ९, सूक्ष्मसाम्पराय १०, उपशान्तमोह ११, क्षीणमोह १२, सयोगकेवली १३, अयोगकेवली १४।

५९३ गुणस्थानोंके ये नाम होनेका कारण क्या है ?

५९३ मोहनीय कर्म और योग।

५९४ कौन कौनसे गुणस्थानका क्या क्या निमित्त है ?

५९४ आदिके चार गुणस्थान तो दर्शनमोहनीय कर्मके निमित्तसे हैं। पाँचवें गुणस्थानसे लगाकर बारहवें गुणस्थान पर्यन्त आठ गुणस्थान चारित्रमोहनीयके निमित्तसे हैं। और तेरहवा और चौदहवा ये दो गुणस्थान योगके निमित्तसे होते हैं। **भावार्थ**—पहिला

गुणस्थान दर्शनमोहनीयके उदयसे होता है। इसमें आत्माके परिणाम मिथ्यात्वरूप होते हैं। चौथा गुणस्थान दर्शनमोहनीय कर्मके उपशम, क्षय अथवा क्षयोपशमसे होता है। इस गुणस्थानमें आत्माके सम्यग्दर्शन गुणका प्रादुर्भाव हो जाता है। तीसरा गुणस्थान सम्यग्मिथ्यात्वरूप दर्शनमोहनीय कर्मके उदयसे होता है। इस गुणस्थानमें आत्माके परिणाम सम्यग्मिथ्यात्व अर्थात् उभयरूप होते हैं। पहिले गुणस्थानमें औदयिक भाव, चौथे गुणस्थानमें औपशमिक, क्षायिक अथवा क्षायोपशमिक भाव और तीसरे गुणस्थानमें औदयिक भाव होते हैं। परन्तु दूसरा गुणस्थान दर्शनमोहनीय कर्मकी उदय, उपशम, क्षय, और क्षयोपशम इन चार अवस्थाओंमेंसे किसी भी अवस्थाकी अपेक्षा नहीं रखता है, इसलिये यहाँपर दर्शन[illegible] य कर्मकी अपेक्षासे पारिणामिक भाव हैं, किन्तु [illegible] चारित्रमोहनीय कर्मका उदय होनेसे

इस गुणस्थानमें चारित्रमोहनीय कर्मकी अपेक्षासे आदयिक भाव भी कहे जा सकते हैं । इस गुणस्थानमें अनतानुबंधिके उदयसे सम्यक्त्वका घात हो गया है, इसलिये यहाँ सम्यक्त्व नहीं है और मिथ्यात्वका भी उदय नहीं आया है, इसलिये मिथ्यात्व परिणाम भी नहीं है । अतएव यह गुणस्थान मिथ्यात्व और सम्यक्त्वकी अपेक्षासे अनुदयरूप है । पाँचवें गुणस्थानसे दशवें गुणस्थानतक छह गुणस्थान चारित्रमोहनीय कर्मके क्षयोपशममें होते हैं, इसलिये इन गुणस्थानोंमें क्षायोपशमिक भाव होते हैं । इन गुणस्थानोंमें सम्यक्चारित्र गुणकी क्रमसे वृद्धि होती जाती है । ग्यारहवा गुणस्थान चारित्रमोहनीय कर्मके उपशमसे होता है, इसलिये ग्यारहवें गुणस्थानमें औपशमिक भाव होते हैं । यद्यपि यहाँपर चारित्रमोहनीय कर्मका पूर्णतया उपशम हो गया है तथापि योगका सद्भाव होनेसे पूर्ण-

गुणस्थान दर्शनमोहनीयके उदयसे होता है। इसमें आत्माके परिणाम मिथ्यात्वरूप होते हैं। चौथा गुणस्थान दर्शनमोहनीय कर्मके उपशम, क्षय अथवा क्षयोपशमसे होता है। इस गुणस्थानमें आत्माके सम्यग्दर्शन गुणका प्रादुर्भाव हो जाता है। तीसरा गुणस्थान सम्यग्मिथ्यात्वरूप दर्शनमोहनीय कर्मके उदयसे होता है। इस गुणस्थानमें आत्माके परिणाम सम्यग्मिथ्यात्व अर्थात् उभयरूप होते हैं। पहिले गुणस्थानमें औदयिक भाव, चौथे गुणस्थानमें औपशमिक, क्षायिक अथवा क्षायोपशमिक भाव और तीसरे गुणस्थानमें औदयिक भाव होते हैं। परन्तु दूसरा गुणस्थान दर्शनमोहनीय कर्मकी उदय, उपशम, क्षय, और क्षयोपशम इन चार अवस्थाओंमेंसे किसी भी अवस्थाकी अपेक्षा नहीं रखता है, इसलिये यहाँपर दर्शन मोहनीय कर्मकी अपेक्षासे पारिणामिक भाव है, किन्तु अनंतानुबन्धिरूप चारित्रमोहनीय कर्मका उदय होनेसे

इस गुणस्थानमें चारित्रमोहनीय कर्मकी अपेक्षासे औदयिक भाव भी कहे जा सकते हैं। इस गुणस्थानमें अनतानुबंधिके उदयसे सम्यक्त्वका घात हो गया है, इसलिये यहाँ सम्यक्त्व नहीं है और मिथ्यात्वका भी उदय नहीं आया है, इसलिये मिथ्यात्व परिणाम भी नहीं है। अतएव यह गुणस्थान मिथ्यात्व और सम्यक्त्वकी अपेक्षासे अनुदयरूप है। पाँचवें गुणस्थानसे दशवें गुणस्थानतक छह गुणस्थान चारित्रमोहनीय कर्मके क्षयोपशमसे होते हैं, इसलिये इन गुणस्थानोंमें क्षायोपशमिक भाव होते हैं। इन गुणस्थानोंमें सम्यक्चारित्र गुणकी क्रमसे वृद्धि होती जाती है। ग्यारहवा गुणस्थान चारित्रमोहनीय कर्मके उपशमसे होता है, इसलिये ग्यारहवें गुणस्थानमें औपशमिक भाव होते हैं। यद्यपि यहाँपर चारित्रमोहनीय कर्मका पूर्णतया उपशम हो गया है तथापि योगका सद्भाव होनेसे पूर्ण-

चारित्र नहीं है—क्योंकि सम्यक्चारित्रके लक्षणमें योग और कषायके अभावसे सम्यक्चारित्र होता है ऐसा लिखा है। बारहवा गुणस्थान चारित्रमोहनीय कर्मके क्षयसे होता है, इसलिये यहां क्षायिक भाव होते हैं। इस गुणस्थानमें भी ग्यारहवें गुणस्थानकी तरह सम्यक्चारित्रकी पूर्णता नहीं है—सम्यग्ज्ञानगुण यद्यपि चौथे गुणस्थानमें ही प्रगट हो चुका था। भावार्थ—यद्यपि आत्माका ज्ञानगुण अनादिकालसे प्रवाहरूप चला आरहा है, तथापि दर्शनमोहनीयका उदय होनेसे वह ज्ञान मिथ्यारूप था, परन्तु चौथे गुणस्थानमें जब दर्शनमोहनीय कर्मके उदयका अभाव हो गया तब वही आत्माका ज्ञानगुण सम्यग्ज्ञान कहलाने लगा। और पंचमादि गुणस्थानोंमें तपश्चरणादिके निमित्तसे ~ मन पर्यय ज्ञान भी किसी किसी जीवके प्रगट जाते हैं तथापि केवलज्ञानके हुए बिना सम्य-

ज्ञानकी पूर्णता नहीं हो सकती, इसलिये इस बार-हवें गुणस्थानतक यद्यपि सम्यग्दर्शनकी पूर्णता हो गई है (क्योंकि क्षायिक सम्यक्त्वके बिना क्षपक-श्रेणी नहीं चढता और क्षपकश्रेणीके बिना १२ वाँ गुणस्थान नहीं होता) तथापि सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र गुण अभीतक अपूर्ण हैं, इसीलिए अभीतक मोक्ष नहीं होता। तेरहवा गुणस्थान योगोंके सद्भावकी अपेक्षासे होता है, इसीलिये इसका नाम सयोग और केवलज्ञानके निमित्तसे सयोगकेवली है। इस गुणस्थानमें सम्यग्ज्ञानकी पूर्णता हो जाती है, परन्तु चारित्र गुणकी पूर्णता न होनेसे मोक्ष नहीं होता। चौदहवा गुणस्थान योगोंके अभावकी अपेक्षा है इसलिये इसका नाम अयोगकेवली है। इस गुणस्थानमें सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र इन तीनों गुणोंकी पूर्णता हो जाती है, अतएव मोक्ष भी अब दूर नहीं

रही। अर्थात् अ इ उ ऋ लृ इन पाँच ह्रस्व स्वरोंके उच्चारण करनेमें जितना काल लगता है उतनेही कालमें मोक्ष हो जाता है।

५९५ मिथ्यात्वगुणस्थानका क्या स्वरूप है?

५९५ मिथ्यात्वप्रकृतिके उदयसे अतत्त्वार्थश्रद्धान रूप आत्माके परिणामविशेषको मिथ्यात्वगुणस्थान कहते हैं। इस मिथ्यात्वगुणस्थानमें रहनेवाला जीव विपरीत श्रद्धान करता है और सच्चे धर्मकी तरफ इसकी रुचि नहीं होती। जैसे पित्तज्वरवाले रोगीको दुग्धादिक रस कडुवे लगते हैं, उसी प्रकार इसको भी समीचीन धर्म अच्छा नहीं लगता।

५९६ मिथ्यात्वगुणस्थानमें किन किन प्रकृतियोंका बंध होता है?

५९६ कर्मके १४८ प्रकृतियोंमसे स्पर्शादिक २० प्रकृतियोंका अभेद विवक्षासे स्पर्शादिक चारमें चार बंधन ५ और संघात ५ का अभेद विवक्षासे

पाँच शरीरोंमें अन्तर्भाव होता है। इस कारण भेद-विवक्षासे सर्व १४८ और अभेदविवक्षामें १२२ प्रकृतियाँ हैं। सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्प्रकृति इन दो प्रकृतियोंका बन्ध नहीं होता है। क्योंकि इन दोनों प्रकृतियोंकी सत्ता सम्यक्त्वपरिणामोंसे मिथ्यात्वप्रकृतिके तीन खंड करनेसे होती है, इस कारण अनादि मिथ्यादृष्टि जीवकी बन्धयोग्य प्रकृति १२० और सत्त्वयोग्य प्रकृति १४६ हैं। मिथ्यात्वगुणस्थानमें तीर्थंकरप्रकृति, आहारकशरीर और आहारकआंगोपांग इन तीन प्रकृतियोंका बंध नहीं होता है। क्योंकि इन तीन प्रकृतियोंका बंध सम्यग्दृष्टियोंके ही होता है, इसलिये इस गुणस्थानमें एकसौ बीसमेंसे तीन घटानेपर ११७ प्रकृतियोंका बंध होता है।

५९७ मिथ्यात्व गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है?

५९७ सम्यक्प्रकृति, सम्यग्मिथ्यात्व, आहारकशरीर,

आहारकआगोपाग और तीर्थंकरप्रकृति इन पाँच
कृतियोंका इस गुणस्थानमें उदय नहीं होता, इस
१२२ मेंसे पाँच घटानेपर ११७ का उदय होता

५९८ मिथ्यात्वगुणस्थानमें सत्त्व (सत्त कितनी प्रकृतियोंका रहता है ?

५९८ एकसौ अडतालीस प्रकृतियोंका ।

५९९ सासादनगुणस्थान किसको कहते

५९९ प्रथमोपशमसम्यक्त्वके कालमें जब ज्या
ज्यादा ६ आवली और कमतीसे कमती १ स
बाकी रहे, उस समय किसी एक अनतानुबधी क
यक उदयसे नाश हो गया है सम्यक्त्व जिसके
जीव सासादनगुणस्थानवाला होता है ।

६०० प्रथमोपशमसम्यक्त्व किसको कहते

६०० सम्यक्त्वके तीन भेद हैं—दर्शनमोहनी
तीन प्रकृति और अनतानुबधीकी ४ प्रकृति
१६ इन सात प्रकृतियोंके उपशम होनेसे

उत्पन्न हो, उसको उपशमसम्यक्त्व कहते हैं और इन सातोंके क्षय होनेसे जो उत्पन्न हो उसको क्षायिकसम्यक्त्व कहते हैं और ६ प्रकृतियोंके अनुदय और सम्यक्प्रकृति नामक मिथ्यात्वके उदयसे जो हो, उसको क्षायोपशमिकसम्यक्त्व कहते हैं। उपशमसम्यक्त्वके दो भेद हैं—एक प्रथमोपशम सम्यक्त्व और दूसरा द्वितीयोपशमसम्यक्त्व। अनादिमिथ्यादृष्टिके पाँच और सादि मिथ्यादृष्टिके सात प्रकृतियाके उपशमसे हो, उसको प्रथमोपशमसम्यक्त्व कहते हैं।

६०१ द्वितीयोपशमसम्यक्त्व किसको कहते है?

६०१ सातवें गुणस्थानमें क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि जीव श्रेणी चढनेके सम्मुख अवस्थामें अनतानुबंधी चतुष्टयका विसयोजन (अप्रत्याख्यानादिरूप) करके दर्शनमोहनीयकी तीनों प्रकृतियोंका उपशम करके जो सम्यक्त्व प्राप्त करता है, उसको द्वितीयोपशमसम्यक्त्व कहते हैं।

६०२ आवली किसको कहते हैं ?

६०२ असंख्यात समयकी एक आवली होत

६०३ सासादनगुणस्थानमें कितनी प्र योंका बंध होता है ?

६०३ पहिले गुणस्थानमें जो ११७ प्रकृ बंध होता है, उनमेंसे मिथ्यात्वगुणस्थानमें व्युच्छित्ति है, ऐसी सोलह प्रकृतियोंके १०१ प्रकृतियोंका बंध सासादनमें होता सोलह प्रकृति ये हैं—मिथ्यात्व, हुंडक नपुंसकवेद, नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, असंप्राप्तासृपाटिकसंहनन, एकेन्द्रिय जाति, तीन, स्थावर, आताप, सूक्ष्म, अपर्याप्त और स

६०४ व्युच्छित्ति किसको कहते हैं ?

६०४ जिस गुणस्थानमें कर्मप्रकृतियोंके अथवा सत्त्वकी व्युच्छित्ति कही हो, उस

नतक ही उन प्रकृतियोंका बध, उदय अथवा सत्त्व पाया जाता है। आगेके किसी भी गुणस्थानमें उन प्रकृतियोंका बध, उदय अथवा सत्त्व नहीं होता है। इसीको व्युच्छित्ति कहते हैं।

६०५ सासादनगुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६०५ पहिले गुणस्थानमें जो ११७ प्रकृतियोंका उदय होता है, उनमेंसे मिथ्यात्व, आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण इन पाँच मिथ्यात्वगुणस्थानकी व्युच्छिन्न प्रकृतियोंको घटानेपर ११२ रहीं। परन्तु नरकगत्यानुपूर्वीका इस गुणस्थानमें उदय नहीं होता, इसलिये इस गुणस्थानमें १११ प्रकृतियोंका उदय होता है।

६०६ सासादनगुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका रहता है?

६०६ एकसौ पैंतालीस प्रकृतियोंका सत्त्व रहता है।

यहाँपर तीर्थंकर प्रकृति, आहारकशरीर और आहारक अंगोपांग इन तीन प्रकृतियोंकी सत्ता नहीं रहती।

६०७ तीसरा मिश्रगुणस्थान किसको कहते हैं?

६०७ सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृतिके उदयसे जीवके न तो केवल सम्यक्त्व परिणाम होते और न केवल मिथ्यात्वरूप परिणाम होते, किंतु मिले हुए दही गुडके स्वादकी तरह एक भिन्न जातिके मिश्र परिणाम होते हैं। इसीको मिश्रगुणस्थान कहते हैं।

६०८ मिश्रगुणस्थानमें कितनी प्रकृतियोंका बंध होता है?

६०८ दूसरे गुणस्थानमें बंधप्रकृति १०१ थीं। उनमेंसे व्युच्छित्तिप्रकृति पच्चीसको (अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, स्त्यानगृद्धि, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय, न्यग्रोधसंस्थान, स्वातिसंस्थान, कुब्जकसंस्थान, वामनसंस्थान, वज्रनाराच

सहनन, नाराचसहनन, अर्द्धनाराचसहनन, कीलित सहनन, अप्रशस्तविहायोगति, स्त्रीवेद, नीचगोत्र, तिर्यग्गति, तिर्यगत्यानुपूर्वी, तिर्यगायु उद्योतके) घटानेपर शेष रहीं ७६ । परतु इस गुणस्थानमें किसी भी आयुकर्मका बंध नहीं होता है, इसलिये छिहत्तरमेंसे मनुष्यायु, और देवायु इन दोके घटानेपर ७४ प्रकृतियोंका बंध होता है । नरकायुकी तो पहिले गुणस्थानमें और तिर्यगायुकी दूसरे गुणस्थानमें ही व्युच्छित्ति हो चुकी है ।

६०९ मिश्रगुणस्थानमें कितनी प्रकृतियोंका उदय होता है ?

६०९. दूसरे गुणस्थानमें १११ प्रकृतियोंका उदय होता है, उनमेंसे व्युच्छिन्न प्रकृति ९ के (अनतानुबंधी ४ एकेंद्रियादिक ४ स्थावर १ के) घटानेपर शेष रहीं १०२ मेंसे नरकगत्यानुपूर्वीके विना (क्योंकि यह दूसरे गुणस्थानमें घटाई जा चुकी है)

शेषकी तीन अनुपूर्वी घटानेपर (क्योंकि तीसरे गुण स्थानमें मरण न होनेसे किसी भी आनुपूर्वीका उदय नहीं है) शेष रहीं ९९ प्रकृति और एक सम्यग्मिथ्या त्वप्रकृतिका उदय यहाँ आ मिला, इस कारण इस गुणस्थानमें १०० प्रकृतियोंका उदय होता है।

६१० मिश्रगुणस्थानमें कितनी प्रकृतियोंका सत्त्व रहता है ?

६१० तीर्थंकर प्रकृतिके बिना १४७ प्रकृतियोंका सत्त्व रहता है।

६११ चौथे अविरतसम्यग्दृष्टिगुणस्थानका क्या स्वरूप है ?

६११ दर्शनमोहनीयकी तीन और अनंतानुबंधीकी चार इन सात प्रकृतियोंके उपशम अथवा क्षय अथवा क्षयोपशमसे और अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभके उदयसे व्रतरहित सम्यक्त्वधारी चौथे गुणस्थानवर्ती होता है।

६१२ इस चौथे गुणस्थानमें बंध कितनी
प्रकृतियोंका होता है ?

६१२ तीसरे गुणस्थानमें ७४ प्रकृतियोंका [illegible]
होता है, जिनमें मनुष्यायु, देवायु, और तीर्थंकर प्रकृति
इन तीन सहित ७७ प्रकृतियोंका बंध चौथे [illegible]

६१३ चौथे गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृ-
तियोंका होता है ?

६१३ तीसरे गुणस्थानमें १०० प्रकृतियोंका उदय
होता है, उनमेंसे व्युच्छिन्न प्रकृति सम्यग्मिथ्यात्वके
घटानेपर रहीं ९९, इनमें चार आनुपूर्वी [illegible]
सम्यक्प्रकृति मिथ्यात्व इन पाँच प्रकृतियोंका [illegible]
नेपर १०४ प्रकृतियोंका उदय होता है।

६१४ चौथे गुणस्थानमें कितनी प्रकृतियोंका
सत्त्व रहता है ?

६१४ सबका। अर्थात् १४८

[illegible]

६१५ देशविरतनामक पाँचवें गुणस्थानका क्या स्वरूप है ?

६१५ प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभके उदयसे यद्यपि संयमभाव नहीं होता तथापि अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभके उपशमसे श्रावकव्रतरूप देशचारित्र होता है। इसहीको देशविरतनामक पाँचवा गुणस्थान कहते हैं। पाँचवें आदि ऊपरके समस्त गुणस्थानोंमें सम्यग्दर्शन और सम्यग्दर्शनका अविनाभावी सम्यग्ज्ञान अवश्य होता है। इनके विना पाँचवें छट्ठे आदि गुणस्थान नहीं होते।

६१६ पाँचवें गुणस्थानमें कितनी प्रकृतियोंका बंध होता है ?

६१६ चौथे गुणस्थानमें जो ७७ प्रकृतियोंका बंध कहा है, उनमेंसे व्युच्छिन्न दशके (अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ, मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, मनुष्यायु, औदारिक शरीर, औदारिक

अगोपांग, वज्रऋषभनाराचसंहननके) घटानेपर शेष रहीं ६७ प्रकृतियोंका बंध होता है।

६१७ पाँचवें गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है ?

६१७ चौथे गुणस्थानमें जो १०४ प्रकृतियोंका उदय कहा है, उनमेंसे व्युच्छिन्नप्रकृति सत्तरहके (अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, देवायु, नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, नरकायु, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकअंगोपांग, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, दुर्भग, अनादेय अयशस्कीर्तिके) घटानेपर शेष रहीं ८७ प्रकृतियोंका उदय है।

६१८ पाँचवें गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका रहता है ?

६१८ चौथे गुणस्थानमें जो १४८ का सत्त्व रहना कहा है, उनमेंसे व्युच्छिन्नप्रकृति एक नरकायुके

विना १४७ का सत्त्व रहता है । किंतु क्षायिकस म्यग्दृष्टिकी अपेक्षासे १४० का ही सत्त्व रहता है ।

६१९ छट्टे प्रमत्तविरतनामक गुणस्थानका स्वरूप क्या है ?

६१९ सञ्ज्वलन और नोकषायके तीव्र उदयसे सयमभाव तथा मलजनक प्रमाद ये दोनों ही युगपत् होते हैं (यद्यपि सञ्ज्वलन और नोकषायका उदय चारित्रगुणका विरोधी है तथापि प्रत्याख्यानावरण कषायका उपशम होनेसे प्रादुर्भूत सकलसयमके घातनमें समर्थ नहीं है, इस कारण उपचारसे सय मका उत्पादक कहा है) इसलिये इस गुणस्थान-वर्ती मुनिको प्रमत्तविरत अर्थात् चित्रलाचरणी कहते हैं ।

६२० छट्टे गुणस्थानमे बध कितनी प्रकृति-योंका होता है ?

६२० पाँचवें गुणस्थानमें जो ६७ प्रकृतियोंका

बंध होता है, उनमेंसे प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ इन ४ व्युच्छिन्न प्रकृतियोंके घटानेपर शेष रहीं ६३ प्रकृतियोंका बंध होता है।

६२१ छट्टे गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है ?

६२१ पाँचवें गुणस्थानमें ८७ प्रकृतियोंका उदय कहा है, उनमेंसे व्युच्छिन्न प्रकृति आठके (प्रत्याख्यानावरण क्रोध, माया, लोभ, तिर्यगति, तिर्यगायु, उद्योत और नीचगोत्रको) घटानेपर शेष रहीं ७९ प्रकृतियोंमें आहारकशरीर और आहारकअंगोपांग ये दो प्रकृति मिलानेसे ८१ प्रकृतियोंका उदय होता है।

६२२ छट्टे गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका है ?

६२२ पाँचवें गुणस्थानमें १४७ प्रकृतियोंकी सत्ता कही है, उनमेंसे व्युच्छिन्न प्रकृति एक तिर्यगायुके

घटानेपर १४६ प्रकृतियोंका सत्त्व रहता है। किन्तु क्षायिकसम्यग्दृष्टिके १३९ का ही सत्त्व है।

६२३ अप्रमत्तविरतनामके सातवें गुणस्थान का स्वरूप क्या है ?

६२३ सञ्ज्वलन और नोकषायके मंद उदय होनेसे प्रमादरहित संयमभाव होते हैं, इस कारण इस गुण-स्थानवर्ती मुनिको अप्रमत्तविरत कहते हैं।

६२४ अप्रमत्तगुणस्थानके कितने भेद हैं ?

६२४ दो हैं—स्वस्थान अप्रमत्तविरत और सातिशय अप्रमत्तविरत।

६२५ स्वस्थान अप्रमत्तविरत किसे कहते हैं ?

६२५ जो हजारों बार छठेसे सातवेंमें और सातवेंसे छठे गुणस्थानमें आवे जावे, उसको स्वस्थान अप्रमत्त कहते हैं।

६२६ सातिशय अप्रमत्तविरत किसको कहते ?

६२६ जो श्रेणी चढ़नेके सम्मुख हो उसको सातिशय अप्रमत्तविरत कहते हैं।

६२७ श्रेणी चढ़नेका पात्र कौन है?

६२७ क्षायिकसम्यग्दृष्टि और द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि ही श्रेणी चढ़ते हैं। प्रथमोपशमसम्यक्त्ववाला तथा क्षायोपशमिकसम्यक्त्ववाला श्रेणी नहीं चढ़ सकता है। प्रथमोपशमसम्यक्त्ववाला प्रथमोपशमसम्यक्त्वको छोड़कर क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टि होकर प्रथम ही अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभका विसंयोजनकरके दर्शनमोहनीयकी तीन प्रकृतियोंका उपशम करके या तो द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि हो जाय अथवा तीनों प्रकृतियोंका क्षय करके क्षायिकसम्यग्दृष्टि हो जाय, तब श्रेणी चढ़नेका पात्र होता है।

६२८ श्रेणी किसको कहते हैं?

६२८ जहाँ चारित्रमोहनीयकी शेष रहीं इक्कीस प्रकृतियोंका क्रमसे उपशम तथा क्षय किया जाय उसको श्रेणी कहते हैं।

६२९ श्रेणीके कितने भेद हैं ?

६२९ दो–उपशमश्रेणी और क्षपकश्रेणी ।

६३० उपशमश्रेणी किसे कहते हैं ?

६३० जिसमें चारित्रमोहनीयकी २१ प्रकृतियोंका उपशम किया जाय ।

६३१ क्षपकश्रेणी किसको कहते हैं ?

६३१ जिसमें उक्त २१ प्रकृतियोंका क्षय किया जाय ।

६३२ इन दोनों श्रेणियोंमें कौन कौनसे जीव चढते हैं ?

६३२ क्षायिकसम्यग्दृष्टि तो दोनों ही श्रेणी चढता है और द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि उपशमश्रेणी ही चढता है, क्षपकश्रेणी नहीं चढता ।

६३३ उपशमश्रेणीके कौन २ से गुणस्थान हैं ?

चार हैं–आठवाँ, नवमाँ, दशवाँ, ग्यारहवाँ ।

[illegible] कौन २ से गुणस्थान हैं ?

६३४ आठवाँ, नवमाँ, दशमाँ, बारहवाँ ये चार हैं ।

६३५ चारित्रमोहनीयकी २१ प्रकृतियोंके उपशमावने तथा क्षय करनेके लिये आत्माके कौनमे परिणाम निमित्तकारण हैं ?

६३५ तीन हैं—अध करण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण ।

६३६ अधःकरण किसको कहते हैं ?

६३६ जिस करणमें (परिणामसमूहमें) उपरितनसमयवर्ती तथा अधस्तनसमयवर्ती जीवोंके परिणाम सदृश तथा विसदृश हों, उसको अध करण कहते हैं । यह अध करण सातवें गुणस्थानमें होता है ।

६३७ अपूर्वकरण किसको कहते हैं ?

६३७ जिस करणमें उत्तरोत्तर अपूर्व ही अपूर्व परिणाम होते जायँ अर्थात्
परिणाम सदा विसदृश ही हों
जीवोंके

हा उनको अपूर्वकरण कहते हैं। और यही आठवाँ गुणस्थान है।

६३८ अनिवृत्तिकरण किसको कहते हैं?

६३८ जिस करणमें भिन्नसमयवर्ती जीवोंके परिणाम विसदृश ही हों और एक समयवर्ती जीवोंके परिणाम सदृश ही हों, उसको अनिवृत्तिकरण कहते हैं। यही नवमा गुणस्थान है। इन तीनों ही करणोंके परिणाम प्रतिसमय अनन्तगुणी विशुद्धता लिये होते हैं।

६३९ अध करणका दृष्टान्त क्या है?

६३९ देवदत्त नामक राजाके ३०७२ तीन हजार बहत्तर आदमी (जो कि १६ महकमोंमें बटे हुए हैं) सेवक हैं। महकमा नं० १ में १६२ हैं। नं० २ में १६६। नं० ३ में १७०। नं० ४ में १७४। नं० ५ में १७८। नं० ६ में १८२। नं० ७ में १८६। नं० ८ में १९०। नं० ९ में १९४। नं० १० में १९८। नं० ११ में २०२।

न० १२ में २०६। न० १३ में २१० । न० १४ में २१४। न० १५ में २१८ और न० १६ में २२२ आदमी काम करते हैं।

पहिले महकमेके १६२ आदमियोंमेंसे पहिले आदमीका वेतन १) रुपया, दूसरेका २) तीसरेका ३) रुपया इसी प्रकार एक एक बढते हुए १६२ वें आदमीका वेतन १६२) रुपया है। और महकमे न० २ में जो १६६ आदमी काम करते हैं उनमेंसे पहिले आदमीका वेतन ४०) रुपया है। द्वितीयादिकका एक एक रुपया वेतन क्रमसे बढता हुआ होनेसे १६६ वें आदमीका वेतन २०५) रुपया है। और महकमे न० ३ में १७० आदमी काम करते हैं सो इनमेंसे पहिले आदमीका वेतन ८०) रुपया है और दूसरे तीसरे आदि आदमियोंका एक एक रुपया बढते बढते १७० वें आदमीका वेतन २४९) रुपया है। महकमे न० ४ में १७४ आदमी काम करते हैं सो

६४२ सातवें गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका रहता है ?

६४२ छठे गुणस्थानकी तरह इस गुणस्थानमें भी १४६ की सत्ता रहती है किंतु क्षायिकसम्यग्दृष्टिके १३९ का ही सत्त्व रहता है।

६४३ आठवें गुणस्थानमें बंध कितनी प्रकृतियोंका होता है ?

६४३ सातवें गुणस्थानमें जो ५९ प्रकृतियोंका बंध कहा है, उनमेंसे व्युच्छित्तिप्रकृति एक देवायुको घटानेपर ५८ का बंध होता है।

६४४ आठवें गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है ?

६४४ सातवें गुणस्थानमें जो ७६ प्रकृतियोंका उदय कहा है, उनमेंसे व्युच्छित्तिप्रकृति चारके (सम्यक्प्रकृति, अर्धनाराच, कीलक, असंप्राप्तासृपाटिका संहनन) घटानेपर शेष ७२ प्रकृतियोंका उदय होता है।

६४५ आठवें गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका है ?

६४५ सातवें गुणस्थानमें जो १४६ का सत्त्व कहा है, उनमेंसे व्युच्छित्तिप्रकृति अनंतानुबंधी क्रोध मान माया लोभ इन चारको घटाकर द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टि उपशमश्रेणीवालेके तो १४२ का सत्त्व है किंतु क्षायिकसम्यग्दृष्टि उपशमश्रेणीवालेके दर्शन मोहनीयकी तीन प्रकृतिरहित १३९ का सत्त्व रहता है। और क्षपकश्रेणीवालेके सातवें गुणस्थानकी व्युच्छित्तिप्रकृति आठको (अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ तथा दर्शनमोहनीयकी ३ और एक देवायुको) घटाकर शेष १३८ प्रकृतियोंका सत्त्व रहता है।

६४६ नवमें अर्थात् अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें बंध कितनी प्रकृतियोंका होता है ?

६४६ आठवें गुणस्थानमें जो ५८ प्रकृतियोंका बंध

६५१ दशवें गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है ?

६५१ नवमें गुणस्थानमें जो ६६ प्रकृतियोंका उदय होता है, उनमेंसे व्युच्छित्तिप्रकृति छहको (स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, संज्वलनक्रोध, मान, मायाको) घटानेपर शेष रहीं ६० प्रकृतियोंका उदय होता है।

६५२ दशवें गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका रहता है ?

६५२ उपशमश्रेणीमें तो नवमेंकी तरह द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टिके १४२ और क्षायिकसम्यग्दृष्टिके १३८ और क्षपकश्रेणीवालेके नववें गुणस्थानमें जो १३ प्रकृतियोंका सत्त्व है, उनमेंसे व्युच्छित्ति प्रकृति छत्तीसको (तिर्यग्गति १ तिर्यग्गत्यानुपूर्वी १ विकलत्रयकी ३ निद्रानिद्रा १ प्रचलाप्रचला १ स्त्यानगृद्धि १ उद्योत १ आतप १ एकेन्द्रिय १

साधारण १ सूक्ष्म १ स्थावर १ अप्रत्याख्यानाव रणकी ४ प्रत्याख्यानावरणकी ४ नोकषायकी ९ सज्वलनक्रोध १ मान १ माया १ नरकगति १ नरकगत्यानुपूर्वी १ को) घटादेनेपर शेष रहीं १०२ प्रकृतियोंका सत्त्व है।

६५३ ग्यारहवें उपशांतमोह नामक गुण स्थानका स्वरूप क्या है ?

६५३ चारित्रमोहनीयकी २१ प्रकृतियोंके उपशम होनेसे यथाख्यातचारित्रको धारण करनेवाले मुनिके ग्यारहवाँ उपशान्तमोह नामका गुणस्थान होता है। इस गुणस्थानका काल समाप्त होनेपर मोहनीयके उदयसे जीव नीचले गुणस्थानमें आ जाता है।

६५४ ग्यारहवें गुणस्थानमें बंध कितनी प्रकृतियोंका होता है ?

६५४ दशवें गुणस्थानमें जो १७ प्रकृतियोंका बंध होता था, उनमेंसे व्युच्छित्तिप्रकृति १६ अर्थात्

ज्ञानावरणकी ५ दर्शनावरणकी ४ अंतरायकी ५ यश कीर्ति १ उच्चगोत्र १ इन सबको घटा देने पर शेष रही एक मात्र सातावेदनीयका बंध होता है।

६५५ ग्यारहवें गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६५५ दशवें गुणस्थानमें जो ६० प्रकृतियोंका उदय होता है, उनमेंसे व्युच्छित्तिप्रकृति एक संज्वलन लोभको घटादेनेपर शेष रहीं ५९ प्रकृतियोंका उदय होता है।

६५६ ग्यारहवें गुणस्थानमे सत्व कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६५६ नवमें और दशवें गुणस्थानकी तरह द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टिके १४२ और क्षायिकसम्यग्दृष्टिके १३९ का सत्व रहता है।

६५७ क्षीणमोह नामक बारहवें गुणस्थानका क्या है और वह किसको होता है?

६५७ मोहनीय कर्मके अत्यन्त क्षय होनेसे स्फटिकभाजनगत जलकी तरह अत्यंत निर्मल अविनाशी यथाख्यातचारित्रके धारक मुनिके क्षीणमोह गुणस्थान होता है।

६५८ बारहवें गुणस्थानमें कितनी प्रकृतियोंका बन्ध होता है?

६५८ एक सातावेदनीयमात्रका बंध होता है।

६५९ बारहवें गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६५९ ग्यारहवें गुणस्थानमें जो ५९ प्रकृतियोंका उदय होता है, उनमेंसे वज्रनाराच और नाराच इन दो संहननप्रकृतियोंको घटा देनेपर ५७ प्रकृतियोंका उदय होता है।

६६० बारहवें गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका रहता है?

६६० दसवें गुणस्थानमें क्षपकश्रेणीवालेकी अपेक्षा

१०२ प्रकृतियोंका सत्त्व है, उनमेंसे व्युच्छित्तिप्रकृति सम्यक्त्व लोभको घटा देनेपर शेष रहीं १०१ प्रकृतियोंका सत्त्व रहता है।

६६१ सयोगकेवलीनामक तेरहवें गुणस्थानका स्वरूप क्या है और वह किसके होता है?

६६१ घातिया कर्मोंकी ४७ (देखो प्रश्न नं० ३४७ में) और अघातिया कर्मोंकी १६ (नरकतियग्गति २, तदानुपूर्वी २, विकलत्रय ३, आयुस्त्रिक ३, उद्योत १, आतप १, एकेंद्रिय १, साधारण १, सूक्ष्म १, और स्थावर १) मिलाकर ६३ प्रकृतियोंका क्षय होनेसे लोकालोकप्रकाशक केवलज्ञान तथा मनोयोग वचनयोग और काययोगके धारक अरहंत भट्टारकके सयोगकेवली नामक तेरहवाँ गुणस्थान होता है। यही केवली भगवान् अपनी दिव्यध्वनिसे भव्य जीवोंको मोक्षमार्गका उपदेश देकर संसारमें मोक्षमार्गका प्रकाश करते हैं।

पर्याप्त १ आदेय १ यश:कीर्ति १ तीर्थंकरप्रकृति १ और उच्चगोत्र १ का) उदय होता है।

६६८ चौदहवें गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका रहता है ?

६६८ तेरहवें गुणस्थानकी तरह इस गुणस्थानमें भी ८५ प्रकृतियोंका सत्त्व है, परंतु द्विचरम समयमें ७२ और अन्तिम समयमें १३ प्रकृतियोंका सत्त्व नष्ट करके अर्हत भगवान् मोक्षको पधारते हैं।

इति पंचमोऽध्याय समाप्त।

ग्रंथकर्त्ताका अन्तिम वक्तव्य।

दोहा

वंदौ श्रीमहावीरजिन, वर्द्धमान गुणखान।
मन्मतरोगनमूरगवि, करन सकल कल्यान॥ १॥
प्रांत ग्वालियरमें बसें, भिंड नगर शुभथान।
श्रीयुत माधवसिंह नृप, न्याय नीति गुणखान॥ २॥
आगरपुरवासी वणिक, जाति नरैया जान।
छटमन सुत गोपाल तहँ, कीनी आय दुकान॥ ३॥
इन्द्रप्रस्थवासी सुजन, मोतीलाल सुजान।
उदासीन संसारसों, खोजन निज कल्यान॥ ४॥
आये या पुर भिंडमें, ढूँढत तत्त्वज्ञान।
तिन निमित्त लघुग्रंथ यह, रच्यौ स्वपरहित जान॥५॥
श्रीयुत पन्नालालजी, अतिसज्जन गुणवान।
तिन निज काज विहाय सब, करी सहाय सुजान॥६॥
अल्पबुद्धि मम विषय यह, जिनसिद्धांत महान।
भूल देखिकर शोधियो, करियो क्षमा सुजान

ज्ञन इस ग्रंथको, पढ़ नित्य धरि ध्यान।
जिनसिद्धान्तमर्म, करैं प्रवेश सुजान॥ ८॥
संवत सहस इक, नौमै छ्यासठि जान।
स श्रावण प्रथम, तिथि नवमी दिन मान॥९॥
द्धन्तप्रवेशिका, या दिन पूरन जान।
ढ़ारहु चिर जिपहु, यावचन्द्रसुमान॥ १०॥

ति श्रीजैनसिद्धान्तप्रवेशिका समाप्ता।

विषयानुक्रमणिका।

स्व० पं० गोपालदासजी रचित ग्रन्थ।

जैनसिद्धान्तदर्पण—इसमें लक्षण, प्रमाण, नय, निक्षेप, द्रव्य सामान्य, अजीवद्रव्य, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल द्रव्योंका और सृष्टिकर्तृत्व आदि विषयोंका विस्तृत वर्णन बड़ी ही उत्तम रीतिसे किया है, जिससे कि सहजमें ही समझमें आजावे। प्रारम्भमें पण्डितजीका जीवनचरित्र भी है। कागज छपाई सफाई बहुत सुन्दर है। पृष्ठसंख्या २६४ मूल्य लागत मात्र ॥।)

सृष्टिकर्तृत्वमीमांसा—सृष्टिका बनानेवाला परमेश्वर नहीं है। इस विषयको प्रबल अकाट्य युक्तियासे सिद्ध किया है। अन्यमतियोंमें बाँटने योग्य पुस्तक है। मूल्य दो आने।

सुशीला उपन्यास—यह एक धार्मिकभावपूर्ण चित्ताकर्षक सुन्दर उपन्यास है। पृष्ठसंख्या ३१२ मूल्य सिर्फ १)

जैनसिद्धान्तप्रवेशिका—आपके हाथहीमें है। मूल्य ।≈)

इनके सिवाय हमारे यहाँपर सब तरहके सब जगहके संस्कृत, हिन्दी, मराठी, गुजराती, अंग्रेजी और उर्दू भाषाके छपे हुए जैनग्रन्थ और हिन्दीके विज्ञान, इतिहास, साहित्य, नाटक, उपन्यासादिकी उत्तमोत्तम पुस्तकें सदा तैयार रहती हैं। बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मँगाकर पढ़ियेगा, सब तरहके ग्रन्थ एक ही जगहसे मंगानेपर खर्च कम पड़ता है। हमारा पता नोट कर लीजिएगा।

जैनसिद्धान्तप्रवेशिका

के अगले भाग भी तैयार करानेकी योजना हो रही है। जिसमें प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोगके प्रश्नोत्तर रहेंगे। छपने पर समाचारपत्रोंद्वारा सूचित किया जायगा।

निवेदक

छगनमल बाकलीवाल

मालिक—जैन ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय

हीराबाग, पो० गिरगाव—बम्बई।